डाक पंजीयन नं. 99/2021-23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

PG-5

आधुनिक समाचार

PG-8

सिनेमाः-कोई शादी के 10 तो कोई 18 साल बाद बना पेरेंट्स

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -08 अंक -241 | प्रयागराज, बुधवार,14 दिसंबर, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

तेलंगाना के निजामाबाद के बड़ा बाजार इलाके में विस्फोट में 1 व्यक्ति हुआ घायल

(आधुनिक समाचार सेवा)

हैदराबाद। निजामाबाद के बड़ा बाजार इलाके में हुए विस्फोट में एक व्यक्ति घायल हो गया। एचओ

वन टाउन ने बताया कि हमें धमाके की सूचना मिली थी। घटना में घायलों ने बताया कि धमाका तब हुआ जब उन्होंने केमिकल के डिब्बे को हिलाया। फायर ब्रिगेड को बुलाया गया। घायल को अस्पताल ले जाया गया, वह अब ठीक है।

काबुल के 'चाइनीज होटल' में बड़ा धमाका

काबुल। अफगानिस्तान में विदेशी लोगों की सुरक्षा पर एक बार फिर सवाल खड़ा हो चुका है। तालिबान के दो सूत्रों ने समाचार एजेंसी रॉयटर्स को बताया, सोमवार को कुछ आतंकवादियों ने मध्य काबुल के एक गेस्ट हाउस, शहर-ए-नवा होटल में गोलीबारी शुरू कर

दी। बिल्डिंग में ब्लास्ट की आवाज भी सुनी गई। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि धमाका काफी जोरदार था और कई राउंड गोलियां भी चली। होटल के अंदर घुसे कुछ हमलावर लगातार फायरिंग की। जानकारी के मुताबिक, तालिबान के प्रवक्ता जबीउल्लाह ने ट्वीट के जरिए जानकारी दी है कि हमला करने वाले तीनों हमलावरों को मार दिया गया है।

पाक्सो मामले के निस्तारण में लगते हैं औसतन 509 दिन : स्मृति इरानी

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति इरानी ने कहा मामले के निस्तारण में औसतन 509 दिन लगते हैं। ऐसे अपराधों से जुड़े मामले की सुनवाई के लिए विशेषष संरक्षण पर राष्ट्रीय हितधारक परामर्श के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए इरानी ने शनिवार को कहा कि औसतन प्रत्येक सजा की तुलना में तीन निर्दोषष करार दिए जाते हैं। पाक्सो के सभी मामलों में से 56 प्रतिशत यौन उत्पीड़न के अपराधों से संबंधित हैं। पाक्सो मामले के निस्तारण में औसतन 509 दिन लगते हैं। उन्होंने कहा, 'मेरा हितधारकों और माननीय जजों से अनुरोध है कि क्या आप हमें बता सकते हैं कि मंत्रालय द्वारा और क्या किया जा सकता है ताकि हम अपने बच्चों से संबंधित मामलों के समाधान में तेजी लाने को लेकर न्याय प्रणाली के साथ भागीदारी सुनिश्चित कर सकें। मुझे आशा है कि भारत के प्रधान न्यायाधीश के मार्गदर्शन में हम इन अंतरालों को भर सकते हैं ताकि ऐसे बच्चों में फिर से विश्वास की भावना पैदा हो।

कि यौन अपराधों से बच्चों को बचाने के लिए बने कानून पाक्सो अदालतों की स्थापना का प्रविधान है। यौन अपराधों से बच्चों के

दिल्ली के झुग्गीवासियों के पुनर्वास के लिए केंद्र प्रतिबद्ध : हरदीप सिंह पुरी

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। केंद्र सरकार दिल्ली के झुग्गीवासियों के पुनर्वास के लिए प्रतिबद्ध है। उनके पुनर्वास के लिए

दिल्ली सरकार की नीति का पालन किया जा रहा है। ये बातें आवास और शहरी विकास मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने राज्यसभा में प्रश्नकाल के दौरान पूरक सवालों का जवाब देते हुए कहीं। उन्होंने कहा कि केंद्र ने पात्र लोगों को वैकल्पिक आवास उपलब्ध कराया है, लेकिन कुछ ही लोगों ने फ्लैटों पर कब्जा लिया है। उनमें से कई कोर्ट चले गए हैं। उन्होंने कहा कि पुनर्विकसित की जाने वाली सात सरकारी कालोनी 536 एकड़ क्षेत्र में फैली हुई हैं। पहचान किए गए ऐसे परिवारों की संख्या 507 है जो झुग्गियों में रह रहे थे। पुनर्वास के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) से 100 फ्लैट खरीदे गए हैं। लेकिन, इसके बाद बड़ी संख्या में झुग्गी में रहने वाले लोग कोर्ट चले गए हैं। कहा कि मलिन बस्तियों के विकास के संबंध में केंद्र को दिल्ली सरकार से कोई प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि लगभग 370 झुग्गी-झोपड़ी में से 210 का सर्वेक्षण कर लिया गया है।

शानदार सुविधाओं से लैस है मोपा हवाईअड्डा, दिल को छू लेंगी ये 5 खासियतें

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। देश में कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पीएम मोदी आज यानी 11 दिसंबर को गोवा में मोपा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का उद्घाटन करेंगे। बता दें कि मोपा इंटरनेशनल एयरपोर्ट की आधारशिला नवंबर 2016 में पीएम मोदी ने ही रखी थी। ये गोवा का दूसरा एयरपोर्ट होगा। पहला एयरपोर्ट डाबोलिम में स्थित है। 2,870 करोड़ रुपये की लागत से तैयार किया गया ये एयरपोर्ट कार्गो सेवाओं को भी पूरा करेगा। मोपा एयरपोर्ट के जरिए परिचालन बढ़कर 35 घरेलू और 18 अंतरराष्ट्रीय स्थानों तक पहुंच जाएगा। मोपा एयरपोर्ट के हर साल लगभग 4.4 मिलियन यात्रियों को सेवा प्रदान करने की उम्मीद है। बाद में इसे प्रति वर्ष 33 मिलियन यात्रियों तक विस्तारित किया जा सकता है।लगभग 2,870 करोड़ रुपये की लागत से विकसित इस हवाई अड्डे को टिकाऊ बुनियादी ढांचे के विषय पर बनाया गया है और इसमें सौर ऊर्जा संयंत्र, हरित भवन, रनवे पर एलईडी लाइट्स के अलावा वर्षा जल संचयन, रीसाइक्लिंग सुविधाओं के साथ अत्याधुनिक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट शामिल हैं। एयरपोर्ट के लिए 3-डी मोनोलिथिक प्रीकास्ट बिल्डिंग, स्टेबिल रोड, रोबोमैटिक होलो प्रीकास्ट वॉल, 5जी कम्पेटिबल आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर जैसी कुछ सर्वश्रेष्ठ-इन-क्लास तकनीकों को अपनाया गया है। गोवा के डाबोलिम एयरपोर्ट से अभी 15 डोमेस्टिक और 6 इंटरनेशनल लोकेशन्स के लिए कनेक्टिविटी है। जबकि मोपा एयरपोर्ट के जरिए 35

डोमेस्टिक और 18 इंटरनेशनल लोकेशन्स तक पहुंचा जा सकेगा। बता दें कि मोपा एयरपोर्ट में दुनिया के सबसे बड़े विमान को संभालने में सक्षम रनवे शामिल हैं। मोपा एयरपोर्ट में नाइट पार्किंग करने की सुविधा मिलेगी, गोवा के पहले एयरपोर्ट डाबोलिम पर उपलब्ध नहीं है। इसके अलावा मोपा एयरपोर्ट में 25,000 मीट्रिक टन की हैंडलिंग क्षमता वाली कार्गो सुविधा होगी। बता दें कि डाबोलिम एयरपोर्ट में कोई कार्गो टर्मिनल नहीं है। इसके अलावा एयरपोर्ट में 14 पार्किंग बे, स्वयं सामान छोड़ने की सुविधा, अत्याधुनिक और स्वतंत्र हवाई नेविगेशन बुनियादी ढांचा शामिल हैं मोपा एयरपोर्ट में यात्रियों को गोवा का एक अनोखा कल्चर देखने को मिलेगा।

कांग्रेस ने कहा गुजरात में इच्छाधारी वोट मॉडल की मीडिया करे जांच चुनाव आयोग नहीं कर रहा न्याय

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। गुजरात चुनावों में अपनी सबसे करारी शिकस्त के बाद कांग्रेस ने वहां मतदान के आखिरी घंटे में पड़े वोटों की संख्या

की गहराई से जांच कराने की मांग उठाते हुए कहा है कि पार्टी अपने स्तर पर फार्म 17सी एकत्र कर इसका विश्लेषण करने के प्रयास में जुटी है। कांग्रेस ने लोकतंत्र के हित में मीडिया से आखिरी एक घंटे में 6.5 फीसद वोट पड़ने पर हैरत जाहिर करते हुए दावा किया कि मतदान केंद्रों में वोटरों की तादाद इतनी नजर नहीं आयी जितने वोट आखिरी घंटे में डाले गए। पवन खेड़ा ने लगाया आरोप पवन खेड़ा ने आखिरी घंटे में पड़े मतों को इच्छाधारी वोट का नाम देते हुए आरोप लगाया कि बड़ौदा, अहमदाबाद सूरत और राजकोट आदि संभागों में शाम के पांच से छह बजे के लिए भारी मतदान हुआ। एक वोट डालने में 60 सेकंड लगते हैं मगर इस दौरान औसतन 45 सेकंड ही लगे और इस आंकड़े के हिसाब से हर बूथ वोट बाहर अफरातफरी, मच जानी चाहिए थी मगर इतनी भीड़ वहां नहीं थी। खेड़ा ने कहा कि बड़ौदा संभाग में 144 विधानसभा क्षेत्र रावपुरा में पांच बजे तक 51 फीसद मतदान हुआ था लेकिन छह बजे यह आंकड़ा 57.68 फीसद हो गया।

एल ए सी में घुसे 300 चीनी सैनिक भारतीय सेना ने दिया करारा जवाब

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। चीनी सेना की निगाहें एलएसी पर रही हैं, लेकिन अरूणाचल प्रदेश के तवांग जिले को लेकर उसका मंसूबा बार-बार सामने आता रहा है। 1962 के युद्ध के समय चीन ने भारत के पूर्वोत्तर हिस्से में अपने सैनिकों का सबसे बड़ा जत्थे से तवांग के रास्ते असम तक घुसपैठ करवाया था। कुछ समय के लिए तवांग चीन के कब्जे में रहा था। अक्टूबर, 2021 में चीन के दो सौ सैनिकों का एक दल तवांग स्थित भारत-चीन-भूटान सीमा के पास भारतीय गांव में घुस आया था, जिसे बाद में भारतीय सैनिकों ने खदेड़ा था। इस बार भी चीनी सेना के मंसूबे कुछ ऐसे ही थे लेकिन भारतीय सैनिकों के सामने एक बार फिर चीनी सेना को मुंह की खानी पड़ी सूत्रों ने कहा कि चीनी लगभग 300 सैनिकों के साथ भारी तैयारी के साथ आए थे, लेकिन उन्हें भारतीय पक्ष के भी अच्छी तरह से तैयार होने की उम्मीद नहीं थी। समाचार एजेंसी एएनआई ने सूत्रों के हवाले से बताया कि 9 दिसंबर को भारतीय सेना के सैनिकों के साथ संघर्ष के दौरान अरुणाचल प्रदेश के तवांग सेक्टर में एलएसी पर चीनी सेना (पीएलए) के 300 से अधिक सैनिकों को भेजा गया था, लेकिन उन्हें उम्मीद नहीं थी कि भारतीय पक्ष भी पूरी तरह से तैयार होगा। एएनआई की रिपोर्ट में कहा गया है कि तवांग सेक्टर में आमने-सामने के क्षेत्र में तैनात भारतीय सैनिकों ने चीनी सैनिकों को करारा जवाब दिया और झड़प में घायल हुए चीनी सैनिकों की संख्या भारतीय सैनिकों से अधिक

है। आइये जानते है एलएसी में भारत-चीन सैनिकों की झड़प के बारे में 1. भारतीय और चीनी सैनिक पिछले हफ्ते पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल प्रदेश में भिड़ गए, इस मामले से परिचित भारतीय अधिकारियों के अनुसार, 2020 के बाद से पड़ोसियों के बीच इस तरह की पहली मुठभेड़ है।2. घटना 9 दिसंबर को हुई और दोनों पक्षों को मामूली चोटें आईं। सूत्रों ने एएनआई को बताया कि दोनों पक्ष तब से क्षेत्र से अलग हो गए हैं, इस मामले पर चर्चा करने के लिए सैन्य कमांडरों के सैनिकों ने अरुणाचल प्रदेश के तवांग सेक्टर में एलएसी से संपर्क किया, जिसका भारतीय सैनिकों ने दृढ़ता से मुकाबला किया। 5. सूत्रों ने कहा कि अरुणाचल प्रदेश के तवांग सेक्टर में एलएसी के साथ कुछ क्षेत्रों में अलग-अलग धारणा के क्षेत्र हैं, जहां दोनों पक्ष अपने दावे की रेखा तक क्षेत्र में गश्त करते हैं। और ये चलन 2006 से जारी है।6. भारतीय और चीनी सैनिकों ने जून 2020 में लद्दाख की गलवान घाटी में चीनी कब्जे वाले तिब्बती पठार को खत्म करते हुए आमने-सामने की लड़ाई की थी। ने मुलाकात भी की है। 3. समाचार एजेंसी पीटीआई ने बताया कि तवांग सेक्टर में झड़प में घायल कम से कम 6 सैनिकों को इलाज के लिए गुवाहाटी लाया गया है। 4. पीएलए

विकसित देशों के पर्यावरण के वादे पूरे नहीं करने से और आएंगी आपदाएं

आबू धाबी। विदेश मंत्री एस.जयशंकर ने पर्यावरण संकट पर कहा कि ग्लोबल वार्मिंग के लिए

जिम्मेदार देशों को आगे आने और दुनिया से झूठ बोलना बंद करने की जरूरत है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि जैसे-जैसे यह बात स्पष्ट होती जाएगी कि विकसित देश अपने किए वादों को पूरा करने को तैयार नहीं हैं, और भी प्राकृतिक आपदाएं आती जाएंगी। आबू धाबी में सोमवार को ग्लोबल फोरम यूएई समिट को संबोधित करते हुए विदेश मंत्री जयशंकर ने पर्यावरण पर चर्चा को दो हिस्सों में बांटते हुए कहा कि पहला, पर्यावरण पर काम और हरित विकास की क्षमता बढ़ाना है।

राज्यसभा में निराधार टिप्पणियां विशेषाधिकार हनन के समान, जो कुछ बोला जा रहा है वह सटीक होना चाहिए

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति व राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने सोमवार को सदस्यों को

आगाह किया कि उन्हें निराधार टिप्पणियां नहीं करनी चाहिए क्योंकि वे सदन के विशेषाधिकार हनन के समान मानी जा सकती हैं।शून्यकाल के दौरान आप के सदस्य संजय सिंह ने आरोप लगाया कि सरकार पिछले आठ वर्षों से राजनीतिक विरोधियों के विरुद्ध जांच एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है। ईडी ने पिछले आठ वर्षों में विपक्षी नेताओं के विरुद्ध 3,000 छापे मारे हैं, किंतु सिर्फ 23 लोगों को ही दोषी पाया गया। सत्ता पक्ष के कुछ सदस्यों ने संजय सिंह की इस टिप्पणी पर आपत्ति जताई। इस पर धनखड़ ने कहा कि सदन में जो कुछ भी बोला जा रहा है वह सटीक होना चाहिए और उसे प्रामाणिकता व जिम्मेदारी के साथ कहा जाना चाहिए। उन्होंने कहा, 'इस सदन में हम किसी भी सदस्य को ऐसा कुछ कहने की अनुमति नहीं दे सकते जो प्रमाणित नहीं हैं और जो विशेषाधिकार का बहुत गंभीर उल्लंघन है। मैं इसके बारे में बहुत गंभीर हूं ..।' सभापति ने यह भी कहा कि अखबार की खबर या किसी की राय का कोई मतलब नहीं है। सदन में आरोप लगाने के लिए कानूनी रूप से स्वीकार्य दस्तावेज होना चाहिए।कांग्रेस अध्यक्ष और विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि सदस्य संसद में दिए गए जवाबों, मीडिया में छपी खबरों और प्रधानमंत्री के सदन के बाहर दिए गए बयानों का उपयोग करते हैं।

जलवायु कार्रवाई को लेकर भारत का ध्यान विवेकपूर्ण उपभोग पर

लंदन। केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने सोमवार को कहा कि भारत जलवायु परिवर्तन संकट के समाधान का हिस्सा बनने के लिए प्रतिबद्ध है। भारत का ध्यान बिना सोचे-समझे चीजों का उपयोग के बजाय सोच-समझकर उपभोग करने के लिए दुनिया को प्रोत्साहित करने पर है। अबू धाबी में इंडिया ग्लोबल फोरम के जलवायु वित्त और प्रौद्योगिकी शिखर सम्मेलन को

आनलाइन संबोधित करते हुए यादव ने कहा कि भारत अगले साल सीओपी28 शिखर सम्मेलन के मेजबान के रूप में संयुक्त अरब अमीरात के साथ साझेदारी में काम करने का इच्छुक है। जी20 की भारत की अध्यक्षता के साथ इस क्षेत्र में काफी तालमेल देखने को मिल सकता है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मिशन लाइफ- या लाइफस्टाइल फार एनवायरनमेंट-जलवायु कार्य एजेंडे के विजन पर भी प्रकाश डाला।

कर्नाटक चुनाव में भाजपा से भिड़ने के लिए कांग्रेस ने ठोकी ताल

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश की जीत से मिली संजीवनी से उत्साहित कांग्रेस ने कर्नाटक चुनाव में भाजपा की सत्ता को गंभीर चुनौती देने की ताल ठोकते हुए सूबे की बसवराज बोम्मई सरकार

के खिलाफ 30 दिसंबर से 75 दिनों के व्यापक आंदोलन और रचनात्मक कार्यक्रमों की घोषणा की है। इस क्रम में राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के असर को भांपते हुए पार्टी ने इसी तर्ज पर कर्नाटक के सभी 224 विधानसभा क्षेत्रों में यात्रा निकालने का फैसला किया है। इस यात्रा में कांग्रेस 40 प्रतिशत कमीशन वाली बोम्मई सरकार को चुनाव में उखाड़ फेंकने का संकल्प जाहिर करेगी। कर्नाटक चुनाव में जोर-शोर से जुटने के इस इरादे के साथ ही कांग्रेस ने मुख्यमंत्री पद के लिए नेता विपक्ष सिद्धरमैया और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डीके शिवकुमार के बीच किसी तरह के टकराव की बात को भी खारिज कर दिया है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की अध्यक्षता में पार्टी मुख्यालय में कर्नाटक के तमाम वरिष्ठ नेताओं की सोमवार को हुई बैठक में यह फैसला लिया गया।

सुप्रीम कोर्ट ने दी सीख, अन्य धर्मों पर लगाए आरोपों को संयत और नियंत्रित करें

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। धोखा, लालच और दबाव में जबरन मतांतरण को रोकने की मांग करने वाले याचिकाकर्ता के वकील से सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वे याचिका में अन्य धर्मों के खिलाफ लगाए गए आरोपों को देखें और उसे संयत व नियंत्रित

करें। कोर्ट ने यह बात याचिका का विरोध कर रहे वरिष्ठ वकील दुष्यंत दवे द्वारा याचिका में अन्य धर्मों के खिलाफ गंभीर और दुखद आरोप लगाए जाने की बात करते हुए उन्हें हटाने की मांग पर कही। कोर्ट ने सुनवाई 9 जनवरी तक टाली दवे ने कहा कि याचिका में कुछ धर्मों के खिलाफ गंभीर और घृणित आरोप लगाए गए हैं जो कि ठीक नहीं है। दवे ने कहा कि कोर्ट उन्हें मामले में पक्षकार बनाए और पक्ष रखने की इजाजत दे। लेकिन कोर्ट ने उनकी मांग पर अगली सुनवाई पर विचार करने की बात कहते हुए सुनवाई 9 जनवरी तक टाल दी क्योंकि केंद्र सरकार का पक्ष रखने के लिए सालिसिटर जनरल मौजूद नहीं थे। वकील अश्वनी उपाध्याय ने सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दाखिल कर मतांतरण रोकने के लिए कड़े कदम उठाने की मांग की है।इस मामले में ईसाई संगठनों और मुस्लिम संगठन जमीयत उलमा हिंद ने हस्तक्षेप अर्जी दाखिल कर कोर्ट से मामले में पक्षकार बनाए जाने और उनका पक्ष सुने जाने की इजाजत मांगी है। इन अर्जियों में जनहित याचिका का विरोध किया गया है। कोर्ट ने जबरन मतांतरण के मामले को गंभीर बताते हुए पिछली सुनवाई पर कहा था कि चैरिटी के नाम पर मतांतरण नहीं किया जा सकता। कोर्ट ने जबरन मतांतरण को संविधान के खिलाफ बताते हुए यह भी कहा था कि यह राष्ट्र की सुरक्षा को खतरा हो सकता है। केंद्र सरकार ने इस मामले में हलफनामा दाखिल कर कहा था कि धार्मिक स्वतंत्रता में जबरन मतांतरण शामिल नहीं है। कोर्ट ने केंद्र सरकार से इस मामले में राज्यों का पक्ष एकत्र करके कोर्ट में हलफनामा दाखिल कर सूचना देने को कहा था। सोमवार को न्यायमूर्ति एमआर शाह और एस रविन्द्र भट की पीठ के समक्ष जब मामला सुनवाई के लिए आया तो कोर्ट को बताया गया कि सालिसिटर जनरल तुषार मेहता उपलब्ध नहीं हैं वे किसी और कोर्ट में व्यस्त हैं जिसके चलते कोर्ट ने मामले की सुनवाई 9 जनवरी तक टाल दी। तभी एक हस्तक्षेप अर्जीकर्ता की ओर से पेश वरिष्ठ वकील दुष्यंत दवे ने कहा कि याचिका में अन्य धर्मों पर अनर्गल गंभीर आरोप लगाए गए हैं।

यूपी में जीएसटी के छापे पर 72 घंटे तक रोक, व्यापारियों के आक्रोश के बाद आया आदेश

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश सरकार ने जीएसटी विभाग के सर्वे और छापों पर अगले 72 घंटो तक रोक लगा दी है। इस छापेमारी को लेकर पूरे प्रदेश भर में आक्रोश था और हर जिले में व्यापारी सड़क पर उतरकर प्रदर्शन कर रहे थे। व्यापारियों का आरोप था कि जीएसटी विभाग के अफसर उन्हें प्रताड़ित कर रहे हैं। गौरतलब है कि पिछले एक हफ्ते से प्रदेश स्तर पर जीएसटी विभाग की छापेमारी चल रही है। इस छापेमारी से यूपी के सभी जिलों के व्यापारियों में हड़कंप मचा हुआ है, जिसके चलते अधिकतर बाजार बंद हैं. जीएसटी टीम की छापेमारी से डरे व्यापारी अपनी दुकानों को बंद किए हैं। प्रयागराज में एस.आई.बी आयुक्त हरि राम चौरसिया ने सोमवार को व्यापारियों के एक प्रतिनिधि मंडल को यह सूचना दी कि प्रदेश में जीएसटी के सर्वे छापे की जो कार्रवाई हो रही थी उस पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी गई है। दरअसल सुबह सुशांत कुमार केसरवानी जिलाध्यक्ष प्रयागराज व्यापार मंडल समेत अन्य आयुक्त से मिलने गए थे।

चीन द्वारा तिब्बत में मानवाधिकारों का हनन बंद हो

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। विश्व मानवाधिकार दिवस के अवसर पर भारत तिब्बत सहयोग मंच प्रयागराज जिला युवा विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में जिला प्रचार प्रमुख अजय मिश्रा के द्वारा चीन के द्वारा तिब्बत के लोगों के ऊपर किए जाने वाले अत्याचार व उनके जीवन पर संकट की विकट स्थिति उत्पन्न करने व संपूर्ण तिब्बती भाई बहनों को उनके आत्मसम्मान स्वाभिमान को निरंतर अपने पैरों तले कुचलने जैसी दुष्ट कृतियों पर संपूर्ण विश्व का ध्यान आकर्षित करने व वैश्विक स्तर पर कड़े कदम उठाए जाने और चीन के विरुद्ध मानव अधिकारों के प्रति ध्यान आकर्षण का आग्रह करने के लिए जन जागरुकता अभियान चलाया गया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने तिब्बती भाई बहनों के अधिकारों की सुरक्षा हेतु मुद्दे को वैश्विक स्तर पर जन आक्रोश दिवस के रूप में मनाए जाने पर सराहना किया। आगे भी चीन के विरुद्ध आक्रामकता दिखाते हुए, उसके आर्थिक कड़ी को कमजोर करने के लिए चीनी वस्तुओं का बहिष्कार करने का भी संकल्प दोहराया। मंच के काशी प्रांत अध्यक्ष आचार्य किशोर जी महाराज, प्रांत महामंत्री मुकेश पांडेय, प्रांत अध्यक्ष युवा विभाग हेमन्त राज, प्रयागराज जिला अध्यक्ष युवा विभाग हिमांशु दुबे के निर्देशन में जिला प्रचार प्रमुख अजय मिश्रा के द्वारा यह कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर जिला महामंत्री विजेंद्र, जिला मंत्री अंकित, अविनाश, पुष्कर,अभयराज , आकाश, नितिन आदि लोंग उपस्थित रहे।

युवा महोत्सव की प्रतियोगिता में हे0नं0बहुगुणा कालेज लालगंज की छात्रा को मिला प्रथम स्थान

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। हेमवती नंदन बहुगुणा पी जी कालेज लालगंज प्रतापगढ़ ने प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित जिला स्तरीय प्रतियोगिता युवा महोत्सव कार्यक्रम में प्रथम स्थान हासिल कर कालेज का मान सम्मान बढाया है। युवा महोत्सव कार्यक्रम में जिले के अनेकानेक महाविद्यालयों ने प्रतिभाग किया था।फोक डांस में हेमवती नंदन बहुगुणा पी जी कालेज लालगंज को प्रथम खिताब से नवाजा गया। भाषण प्रतियोगिता में आदर्श पांडे पक्ष, अनुष्का मिश्रा विपक्ष में दूसरा स्थान जिले में प्राप्त किया है।प्राचार्य प्रो0शैलेन्द्र कुमार मिश्र एवं सांस्कृतिक परिषद के सभी तैयारी कराने वाले सदस्यों ने छात्र-छात्राओं को बधाई दी है। महाविद्यालय जिले स्तर से लेकर प्रदेश स्तर तक अपना परचम हर क्षेत्र में लहरा रहा है। प्रबंधक डॉ बीरेंद्र कुमार मिश्र ने सभी छात्राओं को अंतर्मन से बधाई दी।प्रतियोगिता जीतने वाली छात्राओं में-सोनम, कंचन, अंजली, साहिबा बानो, सानिया बानो ,अनुष्का मिश्रा, कुलदीप पांडे का कहना है कि हम लोग विश्वविद्यालय की भी प्रतियोगिता जीतने के लिए पूर्ण मनोयोग से काम करेंगे। जनसूचनाधिकारी डॉ0फणीन्द्र नारायण मिश्र के कुशल निर्देशन में इस महाविद्यालय के छात्र छात्राएं अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं।

माघ मेलाः संतों को भूमि बंटनी शुरू, दंडी बाड़ा स्वामी नगर सेक्टर 4 और 5 में बसेगा

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। माघमेला 2022-23 की अस्थाई बसावट के लिए रविवार से संतों और संस्थाओं को संगम क्षेत्र में जमीन बंटनी शुरू हुई। भूमि आवंटन से पहले विधिवत भूमि पूजन किया गया। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सबसे पहले दंडी बाड़ा के लगभग 300 संतों को जमीन दी गई। दंडी स्वामी नगर की बसावट हेतु माघ मेला क्षेत्र के सेक्टर 4 एवं सेक्टर 5 में व्यवस्था की गई। भूमि आवंटन पूर्णतया शांति पूर्वक सौहार्दपूर्ण ढंग से, संतों की सहमति एवं इच्छानुसार किया गया। विगत वर्षों के विपरीत आवंटन के दौरान पुलिस बल की कोई आवश्यकता नहीं पड़ी। इस दौरान दंडी स्वामी नगर प्रबंधन समिति के पदाधिकारी, संत, उपजिलाधिकारी प्रेम नारायण तथा माघ मेला प्रबंधक रविकांत द्विवेदी तथा मेला प्राधिकरण के अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

दिनदहाड़े युवक की गोली मारकर हत्या फैली सनसनी

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। नवाबगंज के दिलावलपुर बगिया गांव में दिन दहाड़े एक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया है। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। आरोपियों की तलाश की जा रही है। घायल को उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया। नवाबगंज के दिलावलपुर गांव में खेत में बकरी जाने को लेकर तीन दिन पहले गांव के कुछ लोगों से तारिक का विवाद हुआ था। इसको लेकर गांव में दो पक्षों में सोमवार की सुबह जमकर मारपीट हो गई। लाठी और डंडे से लैस होकर दोनों पक्ष के लोग एक दूसरे पर हमलावर हो गए। इसी दौरान गोली लगने से तारिक नामक युवक की मौके पर ही मौत हो गई। दूसरे पक्ष का नावेद भी गोली लगने से घायल हो गया। इसके साथ ही आधा दर्जन से अधिक लोग लाठी-डंडे से मारपीट में घायल हो गए। घटना के चलते गांव में तनाव फैल गया। सूचना पाकर कई थानों की पुलिस मौके पर पहुंच गई। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। बताया जाता है कि तारिक मुंबई में रहकर टैक्सी चलाता था। कुछ दिन पहले ही वह गांव आया था।

धूमधाम से मनाया गया रामबाग स्थित होटल मधुर मिलन प्रयागराज में विश्व मानवाधिकार दिवस

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। राष्ट्रीय मानवाधिकार अपराध नियंत्रण ब्यूरो ने जिला अध्यक्ष श्री खालिद समदानी व जिलाध्यक्ष महिला विंग श्रीमती श्वेता साहू के नेतृत्व में रामबाग स्थित होटल मधुर मिलन प्रयागराज में विश्व मानवाधिकार दिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया गया प्रयागराज जिले के इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रही आदरणीय मां कल्याणी नंदगिरी महामंडलेश्वर किन्नर अखाड़ा प्रयागराज एवं विशिष्ट अतिथि रहे सम्मानित श्री मोहम्मद हसन जैदी (जूविनाइल जज) जिनकी वजह से कार्यक्रम बहुत ही शानदार रहा इस कार्यक्रम में 100 से विभिन्न क्षेत्र के लोग राष्ट्रीय मानवाधिकार के प्रदेश के व जिले के अधिकारी सदस्य एवं वालंटियर थे ! इस कार्यक्रम में 10 दिसंबर को मानव अधिकार क्यों मनाया जाता है , शुरुआत कहां से हुई और भारत देश में कब से लागू हुआ आज भारत का संविधान हमें इस विषय में क्या अधिकार देता है, संबंधित बातें हुई ! मुख्य अतिथि ने सभा को संबोधित करते हुए भावनात्मक भाषण दिए वही श्री हसन जैदी ने कानून से जुड़ी कुछ घटना का जिक्र करते हुए अच्छी जानकारियां दी बच्चों और महिलाओं के अधिकारों पर भी बात की ! संचालन कर रहे ज़ैद उल्लाह जो की प्रदेश के मीडिया प्रभारी भी हैं सभा को अंत तक बहुत ही शानदार ढंग से अपनी भूमिका को निभाया और कार्यक्रम में जान डाल दी ! जिला अध्यक्ष खालिद समदानी ने अपने 2 वर्ष के कार्य की गणना की अपने द्वारा किए हुए शानदार कार्यों को बताया लोगों से आह्वान किया कि हमारे इस राष्ट्रीय मानव अधिकार संस्था से जुड़ने को कहा और कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए लोगो का धन्यवाद दिया ! महिला जिलाध्यक्ष स्वेता साहू ने विश्व मानव अधिकार दिवस की स्थापना कब और कैसे हुई इसके बारे में जानकारियां दी और सभा में उपस्थित लोगों को धन्यवाद दिया ! प्रदेश टीम से लीगल एडवाइजर उच्च न्यायालय अधिवक्ता श्री फिरोज हैदर, युवा विंग प्रदेश अध्यक्ष श्री सिद्धांत केसरवानी, प्रदेश सलाहकार डॉ रश्मि सिंह ने भी सभा को संबोधित करते हुए मानवाधिकार पर महत्वपूर्ण जानकारी दी अन्य उपस्थित लोगों में पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री शिशिर गुप्ता जी प्रयागराज की टीम से जिला सचिव मोहम्मद मेराज , जिला मीडिया प्रभारी महिला विंग श्रीमती पूनम चौरसिया, जिला मीडिया प्रभारी श्री यश गुप्ता, डॉ शमशाद अहमद , श्री शकील खान, जिला संरक्षक श्रीमती नीता भारद्वाज, श्रीमती मीरा सिंह, जिला सलाहकार डॉ नर्मता जयसवाल, मेंबर श्रीमती विशाखा सिंह श्रीमति पूनम सिंह, श्रीमती स्नेह लता सिंह, श्री शिशिर गुप्ता, एडवोकेट हाई कोर्ट श्री पुष्पेंद्र त्रिपाठी, ब्लॉक मीडिया प्रभारी श्री नरेंद्र यादव, ब्लॉक अध्यक्ष खागा हरीश चंद्र साहू वॉलिंटियर डॉक्टर अंकित सोनी, श्री मोहम्मद नईम, श्री अनिल कुमार आदि उपस्थित थे खेलकूद जगत से नेशनल क्रिकेट प्लेयर श्री अमर काला प्रतिनिधित्व उत्तर प्रदेश टीम, साइकिलिंग में 6200 किलोमीटर जो 33 दिन में पूरा करने का रिकॉर्ड बनाया श्री मनीष मिश्रा को संस्था की तरफ से सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया ! विश्व मानव अधिकार दिवस के कार्यक्रम में सम्मिलित होने वाले सभी सम्मानित लोगों को सर्टिफिकेट देकर उनका सम्मान किया गया ।

रेलवे लाइन पर घंटों पड़ी रही महिला की लाशः अधिकार क्षेत्र को लेकर जीआरपी ने झाड़ा पल्ला, इलाकाई पुलिस ने की कार्यवाही

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। मेजारोड रेलवे स्टेशन के पास सोमवार सुबह मानवता को शर्मसार कर देने वाली तस्वीर सामने आई है। यहां रेल लाइन पर एक अधेड़ महिला की लाश घंटो पड़ी रही। लेकिन, घटनास्थल पर पहुंची जीआरपी ने अधिकार क्षेत्र के विवाद को लेकर शव उठाने से मना कर दिया। लाश पर चादर तक नहीं डाली गई। आखिरकार, मेजारोड पुलिस ने रेलवे अफसरों से बात कर शव को उठवाकर मॉर्च्युरी में भिजवा दिया। हावड़ा-दिल्ली रेलमार्ग के समानांतर बिछाई गई डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर परियोजना रेल लाईन पर एक अज्ञात महिला,45, का क्षत-विक्षत शव देखा गया था। जिसके बाद स्थानीय लोगों ने जीआरपी को सूचना दी। सूचना पर पहुंची जीआरपी ने जगह का मुआयना कर कार्यवाही करने से मना कर दिया। उनके अनुसार शव जिस जगह पड़ी हुई थी वह उनके अधिकार क्षेत्र में नही आती थी। इस पर पुलिस चौकी मेजारोड के प्रभारी रामभवन वर्मा ने रेल अधिकारियों को घटना और जीआरपी के रवैए की सूचना दी। आखिरकार इलाकाई पुलिस ने शव पर कपड़े डालकर पंचायत नामा करते हुऐ पोस्टमार्टम के लिऐ भेज दिया। समाचार लिखे जाने तक लाश की शिनाख्त नही हो पाई है।

नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन के निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण हेतु जारी हुए दिशा निर्देश

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी जिला निर्वाचन कार्यालय (पंचायत एवं नगरीय निकाय) विनायक शुक्ल ने बताया कि राज्य निर्वाचन आयोग उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन-2022 के निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण के सम्बन्ध में आवश्यक दिशा निर्देश जारी कर दिये गये हैं। उन्होंने बताया कि नगरीय निकाय निर्वाचन के दौरान प्रत्याशियों तथा उनके समर्थकों द्वारा मतदाताओं को प्रलोभित कर मतदान प्रभावित करने के उद्देश्य से नकद धनराशि के वितरण की शिकायतें प्राप्त होती रही है जिससे निर्वाचन के दौरान प्रत्याशियों के मध्य तनाव की भी स्थिति उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है और इस प्रकार की सभी घटनाओं का सीधा प्रभाव निर्वाचन की शुचिता एवं निष्पक्षता पर पड़ता है। सभी घटनाओं पर पैनी नजर रखे जाने हेतु उड़न दस्ते गठन किये जायेगें। उड़न दस्ते के कार्य हेतु वीडियो कैमरा वीडियोग्राफर के साथ उपलब्ध कराया जायेगा तथा चेकिंग के समय सम्पूर्ण कार्यवाही की प्रारम्भ से अन्त तक वीडियो रिकार्डिंग की जायेगी और रिकार्डिंग की सीडी तैयार कराकर उसकी एक प्रति सम्बन्धित व्यक्ति को एवं एक प्रति जिला स्तरीय समिति को अनिवार्य रूप से उपलब्ध करायी जायेगी। उड़न दस्ते के अतिरिक्त अन्य अधिकारी नकदी की बरामदगी के सम्बन्ध में किसी कार्यवाही के लिये अधिकृत नहीं होगें। प्रतीक आवंटन के दिनांक से ही नामित उड़न दस्ते वाहनों और व्यक्तियों की चेकिंग करेगें तथा मतदाताओं को प्रभावित करने हेतु उनके बीच रूपया, शराब या अन्य किसी वस्तु का वितरण करना, रिश्वत देना आदि के सम्बन्ध में जब्ती की कार्यवाही सुनिश्चित करेगें। जिन जनपदों में मतदान समाप्त हो जायेगा, वहॉ पर मतदान की समाप्ति के तुरन्त पश्चात् चेकिंग की कार्यवाही बन्द कर दी जायेगी। जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत एवं नगरीय निकाय) आवश्यकतानुसार अथवा निकायवार एक या अधिक समर्पित उड़न दस्ते गठित करेगें जो अवैध नकदी का आदान प्रदान, या शराब का वितरण या अन्य कोई संदेहास्पद वस्तुयें, जो मतदाताओं को घूस देने के लिये प्रयोग में लाई जा रही हो उसका पता लगायेगें। उड़न दस्ते में टीम का प्रमुख एक वरिष्ठ कार्यकारी मजिस्ट्रेट होगा, पुलिस स्टेशन का एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, एक वीडियोग्राफर और 3-4 सशस्त्र पुलिस कार्मिक होगें। उनको नकदी या सामान इत्यादि की जब्ती के लिये पूरी तरह समर्पित एक वाहन, मोबाइल फोन, एक वीडियो कैमरा और अपेक्षित पंचनामा दस्तावेज दिये जायेगें। जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत एवं नगरीय निकाय) आवश्यकतानुसार अथवा निकायवार एक या अधिक निगरानी टीम गठित करेगें। प्रत्येक टीम में एक मजिस्ट्रेट और तीन या चार पुलिस कार्मिक होगें। यह टीम चेक पोस्ट बनायेगी और अपने क्षेत्र में भारी मात्रा में लाये जाने वाली नकदी, अवैध शराब, कोई संदेहास्पद वस्तु या शस्त्रों इत्यादि की आवाजाही पर निगरानी रखेगी।जाँच की समस्त प्रक्रिया की वीडियोग्राफी की जायेगी। स्थैतिक निगरानी दलों के लोकेशन समय-समय पर बदले जायेगें जिससे कि अचरज का पुट बनाये रखा जा सके।उन्होने बताया है कि यदि किसी व्यक्ति के कब्जे में 2 लाख रूपये से अधिक नकदी पायी जाती है, उसका कोई भी अभिलेख नहीं प्रस्तुत किया जाता है और संदेह का पर्याप्त आधार है कि इसका प्रयोग मतदाताओं को रिश्वत देने में किया जा सकता है तो उस धनराशि को जब्त कर लिया जायेगा और सम्बन्धित प्रावधानों के अधीन कार्यवाही की जायेगी। कार्यवाही की सूचना आयकर विभाग को भी दी जायेगी। नामित उड़न दस्ते द्वारा प्रतिदिन की गयी कार्यवाही का विवरण जिला स्तरीय कमेटी के सदस्य सचिव मुख्य विकास अधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा तथा जिला स्तरीय कमेटी द्वारा परीक्षण के उपरान्त आवश्यक कार्यवाही की जायेगी। निर्वाचन की अधिसूचना जारी होने पश्चात् जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत एवं नगरीय निकाय) द्वारा जनता और राजनीतिक दलों से निर्वाचनों के दौरान निर्धारित मात्रा से अधिक नकदी के साथ संचरण न करने हेतु अपील प्रकाशित की जायेगी।यदि किसी निर्वाचन क्षेत्र में किसी व्यक्ति को किसी आवश्यक उद्देश्य से निर्धारित मात्रा से अधिक नकदी ले जाने की आवश्यकता पड़ती है तो उसे ले जाने के लिये उसके पास ऐसे धन के स्रोत और उसके प्रयोग का कारण बताने के लिये समुचित कागजात होने चाहियें। निर्वाचन की अधिसूचना के उपरान्त जिला स्तर पर व्यय सीमा सम्बन्धी शिकायतें प्राप्त करने हेतु नियंत्रण कक्ष खोला जायेगा जिसमें एक वरिष्ठ अधिकारी प्रभारी के रूप में तैनात होगा। नियंत्रण कक्ष में दूरभाष की सुविधा उपलब्ध होगी जिसके नम्बर की सूचना दैनिक समाचार पत्र के माध्यम से राजनैतिक दलों/उम्मीदवारों एवं आम जनता को दी जायेगी।

मण्डल रेल प्रबंधक ने अधिकारियों संग नवनिर्मित दोहरी लाइन के विद्युतीकरण का किया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार सेवा)

बलिया/वाराणसी। रेलवे प्रशासन द्वारा यात्री सुविधाओं के उन्नयन एवं परिचालन सुगमता हेतु मूलभूत ढ़ांचे में विस्तार के क्रम में फरिहा-सठियाँव (29 किमी) रेल खण्ड पर नवनिर्मित दोहरी लाइन के विद्युतीकरण का प्रमुख मुख्य विद्युत इंजिनियर ए0के0 शुक्ला द्वारा संरक्षा परिक्षण किया गया। इस निरीक्षण के दौरान वाराणसी मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय,मुख्य परियोजना प्रबंधक (न्थ) विकास चन्द्रा,वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजिनियर (कर्षण)आर0एन0 सिंह,वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजिनियर (सामान्य) पंकज केशरवानी,वरिष्ठ मंडल सिगनल एवं दूरसंचार इंजिनियर रजत प्रिय,मंडल इंजीनियर (सामान्य) पी0पी0 कुजुर,सहायक मंडल परिचालन प्रबंधक(मूवमेंट) हीरा लाल समेत रेल विकास निगम लिमिटेड एवं वाराणसी मंडल के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे प्रमुख मुख्य विद्युत इंजिनियर ए0 के0 शुक्ला ने सबसे पहले फरिहां रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया।विद्युतीकृत रेल खण्ड के मानक के अनुरूप यार्ड प्लान, न्यूट्रल सेक्शन, पावर सब स्टेशन, स्टेशन वर्किंग रूल, केंद्रीकृत स्टेशन पैनल, पैदल उपरिगामी पुल,प्लेटफार्म क्लियरेंस, पॉइंट क्रासिंग, सिगनलिंग, अर्थिंग ट्रैक,ओवर हेड ट्रैक्शन की ऊँचाई ,ब्लॉक ओवर लैप, फाउलिंग मार्क, सैंड हम्प, पैनल इन्टरलॉकिंग, फीडर पावर सप्लाई वितरण प्रणाली व नियंत्रण फीडरआइसोलेशन आदि की संरक्षा परखी।फरिहां स्टेशन पर प्रमुख मुख्य विद्युत इंजिनियर ने दोहरिकृत रेल खण्ड के विद्युतीकरण के मुताबिक विकसित विभिन्न कार्यो का निरीक्षण में सभी कार्य मानक के अनुरूप पाया। तदुपरान्त प्रमुख मुख्य विद्युत इंजिनियर ने अपने निरीक्षण स्पेशल टावर वैगन से फरिहा-सरायरानी-आजमगढ़ ब्लाक सेक्शन के निरीक्षण के लिए रवाना हुए। प्रमुख मुख्य विद्युत इंजिनियर ने फरिहा-आजमगढ़ रेल खण्ड पर किमी सं-48/19-21 पर ओवर हेड विद्युत लाइन क्रासिंग का परिमापन किया। विद्युतीकृत खण्ड के मानक के अनुरूप संरक्षा परखी, इसी क्रम में किमी सं-50/6 पर रानी की सराय घँए स्टेशन का निरीक्षण किया और विद्युतीकृत रेल खण्ड के मानक के अनुरूप यार्ड प्लान,न्यूट्रल सेक्शन, पावर सबस्टेशन, स्टेशन वर्किंग रूल,केंद्रीकृत स्टेशन पैनल, प्लेटफार्म क्लियरेंस, पॉइंट क्रासिंग, सिगनलिंग,अर्थिंग, ओवर हेड ट्रैक्शन की ऊँचाई , पावर डिस्ट्रीब्यूशन एवं विफलता की स्थिति में किये जाने वाले कार्य प्रणाली देखी। तत्पश्चात उन्होंने आजमगढ़ रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया और विद्युतीकृत रेल खण्ड के मानक के अनुरूप यार्ड प्लान,न्यूट्रल सेक्शन, पावर सब स्टेशन,स्टेशन वर्किंग रूल,केंद्रीकृत स्टेशन पैनल, पैदल उपरिगामी पुल,प्लेटफार्म क्लियरेंस, पॉइंट क्रासिंग, सिगनलिंग , अर्थिंग ट्रैक, ओवर हेड ट्रैक्शन की ऊँचाई ,ब्लॉक ओवर लैप,फाउलिंग मार्क,सैंड हम्प,पैनलइन्टर।लॉकिंग, फीडर पावर सप्लाई वितरण प्रणाली तथा नियंत्रण फीडर आइसोलेशन आदि की संरक्षा परखी इस दौरान मुख्य इंजिनियर आजमगढ़-सठियाँव रेल खण्ड का निरीक्षण करते हुए आगे बढ़े और किमी सं-40 /02 स्थित सिधारी हाल्ट का संरक्षा निरीक्षणकर विद्युतिकृत खण्ड के मानकों के अनुरूप विभिन्न संशोधनों की जाँच के साथ-साथ इस रेल खण्ड पर पड़ने वाले समपार फाटकों का भी संरक्षा निरीक्षण किया और फाटकों पर नियुक्त गेटमैनों का विधुतिकृत खण्ड पर कार्य करने हेतु संरक्षा ज्ञान परखा और संतुष्ट हुए। प्रमुख मुख्य विद्युत इंजिनियर अपने निरीक्षण स्पेशल से उक्त रेल खण्ड का निरीक्षण करते हुए आगे बढ़े और रेल खण्ड में पड़ने वाले कर्वेचर का इन्डेन्ट मापा एवं ओवर हेड ट्रैक्शन लेवलिंग तथा अभिकेन्द्र त्वरण का परिक्षण किया। तदुपरांत निरीक्षण के क्रम में प्रमुख मुख्य विद्युत इंजिनियर ने किमी सं-30/5 पर सठियाँव के पावर सब स्टेशन पहुँचे और पावर सप्लाई, पावर डिस्ट्रीब्युशन,अर्थिंग एवं आपात स्थिति में प्रबंधन का परिक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में आगे बढते हुए उन्होंने विधुतीकृत के अनुरूप सभी उपकरणों का संस्थापन स्टैंडर्ड मानको के अनुरूप पाया। इसके पश्चात प्रमुख मुख्य विद्युत इंजिनियर ने सठियाँव रोड रेलवे स्टेशन पहुँच कर स्टेशन का व्यापक निरीक्षण किया,इस दौरान उन्होंने स्टेशन वर्किंग रुल,प्लेटफार्म से ओवर हेड की ऊँचाई, पैदल उपरिगामी पुल से ओवर हेड क्लियरेंस एवं विद्युतीकृत मानकों के अनुरूप ट्रैक सर्किट, सिगनलिंग, ब्लाक यंत्र एवं यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न यात्री सुविधाओं का निरीक्षण किया। फरिहाँ- सठियाँव रेल खण्ड पर निरीक्षण करते हुए प्रमुख मुख्य विद्युत इंजिनियर ने ब्लाक सेक्शन में समपार फाटकों से ओवर हेड की उचित दूरी, कर्वेचर के इन्डेन्ट ,पूल पुलियाओं तथा ब्लाक सेक्शन में विद्युतीकृत स्टैंडर्ड मानकों के अनुसार लाइन फिटिंग्स, बैलास्टिंग एवं पैकिंग, कर्वेचर पर क्लियरेंस तथा विद्युतीकरण के अनुरूप समपार फाटकों बूम लॉक व हाइट गेजों के संस्थापन सुनिश्चित किया।निरीक्षण के उपरान्त अधिकतम गति से नई विद्युतीकृत लाइन पर विद्युत इंजन युक्त स्पेशल ट्रेन से प्रमुख मुख्य विद्युत इंजिनियर द्वारा गति परीक्षण सफल रहा। इस दौरान निरीक्षण स्पेशल ने 120 किमी प्रति घंटे की उच्चतम गति से सठियाँव से फरिहा की दूरी तय कर की। पूर्वोत्तर रेलवे के मण्डल रेल प्रबन्धक वाराणसी के जनसम्पर्क अधिकारी अशोक कुमार ने आमजन को यह सूचित करते हुए अपील की है कि आज से सठियाँव-फरिहा खण्ड को विद्युतीकृत समझें और रेलवे ट्रैक व ओवर हेड लाइन से सुरक्षित दूरी बनाये रखें।

देवरिया में तारकोल बचाने का खेल

(आधुनिक समाचार सेवा)

गोरखपुर।सांवलियागंज तक सड़क निर्माण में मानकों की धज्जियां उड़ाए जाने का किसी ने वीडियो बना कर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। घटिया सड़क निर्माण में धांधली से नाराज ग्रामीणों ने इसकी शिकायत पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों से भी की है। तारकोल बचाने के चक्कर में लोक निर्माण विभागने एक सड़क का निर्माण मानकों की अनदेखी कर कराया है। सड़क बनने के साथ ही चटाई की तरह उखड़ रही है। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने पर शासन ने जांच गोरखपुर के मुख्य अभियंता से कराने का निर्देश दिया है। अधीक्षण अभियंता जांच रिपोर्ट आने के बाद कार्रवाई करने की बात कह रहे हैं। मानकों की धज्जियां उड़ाते हुए रुद्रपुर तहसील क्षेत्र के भेड़ी गांव में एक सड़क निर्माण कराया गया है। पीडब्ल्यूडी ने बिना धूल साफ किए ही खानापूर्ति करते हुए तारकोल गिरा कर सड़क नवीनीकरण का आधा कार्य करा दिया है। जबकि सड़क निर्माण कराने से पहले मिट्टी को साफ करने के बाद तारकोल गिरा कर सड़क बनाई जाती है। ऐसा न करने के कारण धूल-मिट्टी से भरी सड़क पर कम तारकोल गिराने से सड़क बनने के साथ ही उजड़ने लगी है। भेड़ी गांव से सांवलियागंज तक सड़क निर्माण में मानकों की धज्जियां उड़ाए जाने का किसी ने वीडियो बना कर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। घटिया सड़क निर्माण में धांधली से नाराज ग्रामीणों ने इसकी शिकायत पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों से भी की है। इसके बाद भी कार्रवाई न होने पर शिकायत शासन स्तर पर पहुंच गई सोमवार को पूरे मामले को आला अफसरों ने गंभीरता से लेते जांच कमेटी बनाई है। विभागीय सूत्रों के अनुसार, सड़क निर्माण की जांच गोरखपुर के मुख्य अभियंता को दी गई है। जांच कमेटी में जनपद के किसी अभियंता को शामिल न करने का निर्देश दिया गया है। शासन ने जांच बैठा दी है। गोरखपुर के मुख्य अभियंता सड़क निर्माण की जांच करेंगे। इसके लिए उनको ही कमेटी का गठन करना है। हमने भी निरीक्षण किया है। जांच रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

मंत्री अनिल राजभर ने किया खेलो बनारस का उद्घाटन

(आधुनिक समाचार सेवा)

बानारसी। खिलाड़ियों में भरा उत्साहखिलाड़ियों को संबोधित करते हुए मंत्री बोले-खेल के लिए उत्साह जगाओ। जमकर खेलो। खेल के क्षेत्र में कमाई के कई साधन हैं। इसे बढ़ाएं और दुनिया में देश का नाम रोशन करें। वाराणसी में मंगलवार को सिगरा स्टेडियम में खेल विभाग की ओर से खेलो बनारस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मंत्री अनिल राजभर ने किया। खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए मंत्री बोले-खेल के लिए उत्साह जगाओ। जमकर खेलो। खेल के क्षेत्र में कमाई के कई साधन हैं। इसे बढ़ाएं और दुनिया में देश का नाम रोशन करें।

दूसरे के स्थान पर परीक्षा देने वाला आरोपी गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)

आजमगढ़। बिलरियागंज थाने की पुलिस ने दूसरे के स्थान पर परीक्षा देने वाले युवक को उसके घर से दिन में करीब 10.10 बजे गिरफ्तार कर लिया। पकड़ा गया आरोपी अरविंद क्षेत्र के जमीन मुहम्मदपुर गांव का निवासी है। जानकारी मुताबिक चार अप्रैल 2022 को श्रीमती कमला देवी इंटर कालेज बघैला थाना बिलरियागंज में हाईस्कूल विज्ञान विषय की परीक्षा में परीक्षार्थी अरविंद गोड़ पुत्र जगरोपन गोड के स्थान पर जीयनपुर के सोहरैया हाफिज गांव निवासी फर्जी विद्यार्थी विद्यासागर पुत्र रामधनी परीक्षा दे रहा था। जिसे केंद्र व्यस्थापक द्वारा पकड़ लिया गया था। जिसके संबंध में स्थानीय थाने में विद्यासागर व अरविंद गौड़ के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत किया गया था।

तस्वीरों में देखें: काशी में जैसे उतर आए हों देवता, भव्य और दिव्य सजा विश्वनाथ कॉरिडोर

(आधुनिक समाचार सेवा)

काशी । विश्वनाथ धाम के लोकार्पण की पहली वर्षगांठ है। लोकार्पण उत्सव मनाने के लिए बाबा का धाम सज-धजकर तैयार हो गया है। गंगा द्वार से विश्वनाथ द्वार तक पूरा परिसर रंगबिरंगी रोशनी में नहा उठा है। ऐसा लग रहा है मानो आसमान से जमीं पर सितारे भी बाबा धाम का उत्सव मनाने धरती पर उतर आए हों। आज सुबह मंगला आरती के साथ ही धाम के लोकार्पण के प्रथम वर्षगांठ का उत्सव आरंभ हो गया। हवन-पूजन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हो गई है। मशहूर भजन गायिका अनुराधा पौडवाल आज शाम में शिव प्रस्तुति देंगी। धाम की यज्ञशाला में मंत्रों की आहुतियां अर्पित हुईं तो दंडी स्वामियों के लिए भंडारे का भी आयोजन हो रहा है। विश्वनाथ धाम के एक ओर पीएम मोदी समेत सीएम और अन्य मंत्रियों की फोटो भी लगी है। वहीं शिव बरात समिति की ओर से मंगलवार को मैदागिन से चितरंजन पार्क तक शोभायात्रा निकाली जाएगी। दीयों से धाम ऐसे जगमगा रहा है जैसे स्वयं देवता धरती पर आ गए हों। बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 13 दिसंबर 2021 को किया था लोकार्पण। 50 हजार वर्गमीटर में बने 434 करोड़ रुपये की परियोजना के पहले चरण में बनकर तैयार धाम को किया था समर्पित। लोकार्पण के बाद धाम के 33 भवनों में से अभी 14 भवनों का हो रहा संचालन। दूसरे चरण के काम के लिए 60 करोड़ रुपये हुए अतिरिक्त खर्च।

बनारस बार एसोसिएशन पर मतदान शुरू: 44 प्रत्याशी मैदान में, शाम 5 बजे तक चलेगी वोटिंग,सुरक्षा के कड़े इंतेजाम

(आधुनिक समाचार सेवा)

बानारसी।बनारस बार एसोसिएशन के सभागार में मंगलवार मतदान के बाद, 14 को सुबह 8 बजे से मतगणना होगी। एल्डर्स कमेटी के चेयरमैन क्षत्रधारी सिंह ने सदस्यों प्रमोद कुमार पाठक, संजय कुमार वर्मा, अवधेश कुशवाहा, धर्मेंद्र नाथ शर्मा और सहायक प्रदीप श्रीवास्तव व अजय बरनवाल के साथ बैठक के बाद चुनाव तैयारियों की जानकारी दी। बनारस बार एसोसिएशन के चुनाव के लिए मतदान शुरू हो गया है। अध्यक्ष पद पर 5 और महामंत्री पद पर 7 प्रत्याशियों समेत कुल 19 पदों पर 44 दावेदार चुनाव मैदान में हैं। सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक होने वाले मतदान के लिए 60 बूथ बनाए गए हैं। 4901 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इस बार चुनाव में अध्यक्ष पर रोचक और महामंत्री पर त्रिकोणीय मुकाबला देखने को मिलेगा बनारस बार एसोसिएशन के सभागार में मंगलवार मतदान के बाद, 14 को सुबह 8 बजे से मतगणना होगी। एल्डर्स कमेटी के चेयरमैन क्षत्रधारी सिंह ने सदस्यों प्रमोद कुमार पाठक, संजय कुमार वर्मा, अवधेश कुशवाहा, धर्मेंद्र नाथ शर्मा और सहायक प्रदीप श्रीवास्तव व अजय बरनवाल के साथ बैठक के बाद चुनाव तैयारियों की जानकारी दी। बताया कि 4901 मतदाताओं में आजीवन 3356 व 1545 पुराने सदस्य शामिल हैं। 70 सहायक चुनाव अधिकारी और 60 मतबूथ बनाए गए हैं। वरिष्ठ अधिवक्ता दीनानाथ सिंह,राधेश्याम चौबे और सौरभ कुमार श्रीवास्तव को पर्यवेक्षक बनाया गया है। मतदान के दौरान हैंडबिल वितरण पर रोक है। मतदान के लिए मूल पहचान पत्र लाना अनिवार्य है।

देवरिया में बस की चपेट में आने से बुलेट सवार दो युवकों की मौत, गांव में छाया मातम

(आधुनिक समाचार सेवा)

देवरिया। कसया मार्ग स्थित डुमरी राघोपुर पुल के निकट पहुंचे थे कि देवरिया की तरफ से आ रही रोडवेज बस की चपेट में आ गए। बाइक को टक्कर इतनी तेज लगी कि दोनों युवक लगभग 10 फीट ऊपर हवा में उछल कर सड़क किनारे गड्ढे में गिर गए। हादसे में दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। देवरिया जनपद के रामपुर कारखाना थाना क्षेत्र के पास सोमवार को रोडवेज बस की चपेट में आने से बुलेट सवार दो युवकों की मौत हो गई। बस के झटके से बाइक सवार हवा में उछल कर सड़क किनारे गड्ढे में गिर पड़े। सदर कोतवाली थाना क्षेत्र के धनौती खुर्द निवासी खुशहाल यादव 25 वर्ष पुत्र सुदामा यादव एवं बादल अंसारी 22 वर्ष पुत्र हजरत अली अपनी बुलेट मोटरसाइकिल से रामपुर कारखाना आए थे। काम निपटाने के बाद दोनों युवक को घर लौट रहे थे।

विकास कार्यों की जांच के दौरान दो पक्षों में मारपीट डरकर लौटे अधिकारी

(आधुनिक समाचार सेवा)

संतकबीर नगर। जिले के विकास खंड हैसर बाजार के मुंडेरा शुक्ल गांव में सोमवार को विकास कार्यों में गड़बड़ी की जांच करने पहुंचे लोकपाल मनरेगा के सामने ही गांव के दो पक्ष भिड़ गए। मारपीट होता देख वह बिना जांच किए ही वापस लौट गए। पुलिस ने दोनों पक्ष को समझाकर मामला शांत कराया। एक पक्ष के दो लोगों को अधिक चोटें आने की बात बताई जा रही है। जिले के लोकपाल पीके लाल सोमवार को मुंडेरा शुक्ल गांव निवासी राजकुमार शुक्ला की शिकायत पर मनरेगा और आवास की जांच करने पहुंचे थे। आवास से संबंधित शिकायत की जांच शिकायतकर्ता के पक्ष के लोगों के सामने जांच अधिकारी ने शुरू ही की थी कि प्रधान पक्ष के तमाम लोग वहां आ गए।जांच अधिकारी जांच कार्य कर ही रहे थे कि दोनों पक्षों के बीच कहासुनी होते-होते मारपीट होने लगी। एक दूसरे के बीच जमकर हो रही हाथापाई और मौके पर लाठी-डंडे के साथ दोनों पक्षों के लोग पहुंच गए। यह देख लोकपाल मनरेगा ने जांच को बंद कर दिया।पीके लाल ने बताया कि स्थिति को देख तत्काल एसओ धनघटा को सूचित किया और बगैर जांच कार्य पूर्ण हुए वापस लौट आया। उन्होंने बताया कि सोशल ऑडिट टीम की जांच के दौरान गांव में विकास कार्यों में अनियमितता पाए जाने की सोशल ऑडिट टीम ने अपनी जांच रिपोर्ट में उल्लेख किया है।जिस पर जांच करके कार्रवाई किए जाने की मांग गांव निवासी राजकुमार शुक्ला ने जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी और लोकपाल से की है। इसी शिकायत की जांच करने गए थे कि दो पक्षों में विवाद हो गया।

सीधे प्रवेश

100% Placement

15% Fee Concession

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र

(भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त)

(पहले आओ पहले पाओ)

- प्रशिक्षण में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को रोजगार पाने का पूर्ण अवसर
- हाइस्कूल में 60% से उपर अंक लाने वाले छात्रों को प्रशिक्षण शुल्क में 15% प्रतिशत की छूट दी जायेगी।

- कम्प्युटर आपरेटर (कोपा)
- डेटा इंट्री आपरेटर
- फायर सेफ्टी
- कम्प्युटर टीचर ट्रेनिंग
- इलेक्ट्रीशियन
- सीएनसी प्रोग्रामिगं
- इलेक्ट्रिक मैकैनिक

फिटर
वेल्डर
सीसीए
रेफ्रीजरेटर एवं ए.सी.
सिक्योरिटी सर्विस
बेसिक कम्प्युटर
कम्प्युटर हाडवेयर

Apply Online: www.nainiiti.com | Mail us at – info@nainiiti.com

प्रवेश हेल्पलाइन नं0

8081180306 , 9415608710 , 8103021873

⇨ इण्डियन कॉफी हाउस के सामने तुलसीयानी प्लाजा , तीसरी मंजिल , सिविल लाइन , प्रयागराज।

मण्डलायुक्त की अध्यक्षता में महाकवि /पत्रकार सुब्रमण्यम भारती जयंती के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न

(आधुनिक समाचार सेवा)
मिर्ज़ापुर। प्रमुख सचिव, 30प्र0 शासन के निर्देश के अनुपालन में जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में आजादी का अमृत महोत्सव की श्रृंखला में महाकवि पत्रकार सुब्रण्यम भारती के जयंती के अवसर पर ठभारतीय भाषा उत्सव पर विभिन्न

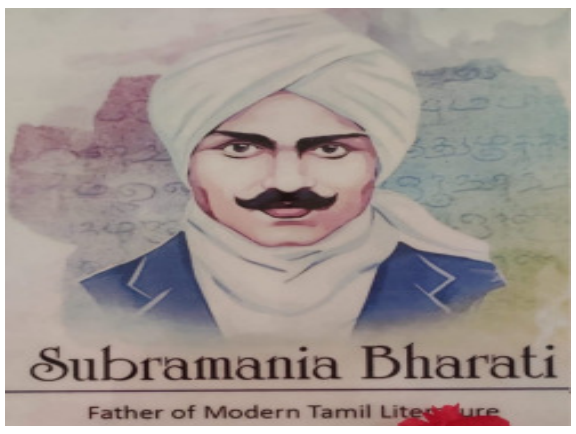

कार्यक्रम आर्य कन्या इंटर कालेज में मंडलायुक्त विन्ध्याचल मण्डल डा0 मुथुकुमार स्वामी बीद तथा मुख्य विकास अधिकारी श्रीलक्ष्मी वीएस की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ मण्डलायुक्त एवम मुख्य विकास अधिकारी ने सुब्रमण्यम भारती के चित्र पर मालार्पण कर दीप पर्वजलन के साथ हुआ। इसके उपरांत विभिन्न कालेजों के छात्र छात्राओं ने भाषण गीत एवम चित्रकला द्वारा उनके जीवन पर प्रकाश डाला जिसमे सुन्दर मुन्दर इंटर कालेज , राजकीय इंटर कालेज जीआईसी एवम चित्रकार छोटे बच्चे छात्र कार्तिकेय ने तत्काल स्वचित्रांकन कर महाकवि सुब्रमण्यम भारती का पेंसिल से स्केचिंग चित्र मण्डलायुक्त डॉ मुथू स्वामी को भेंट कर महाकवि के दक्षिण भाषा एवम हिंदी भाषा के राष्ट्रीय एकता को जागृत कर लोगो मुग्ध कर दिया। प्रतिभागियों को छात्र छात्रओं को मण्डलायुक्त ने पुरस्कृत कर बच्चों का उत्साहवर्धन किया।इसके उपरांत मंडलायुक्त विन्ध्याचल मण्डल, डॉ0 मुथुकुमार स्वामी बी0 ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि आज महाकवि के सैकड़ो वर्ष स्वर्गवासी हुए हो गये और आज भारतीय भाषा उत्सव मनाने का मुख्य उद्देश्य यही दर्शाता है कि भारतीय संविधान में 22 भारतीय भाषाओं को अंगीकार किया गया है, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मातृ भाषा के साथ-साथ कम से कम एक अन्य भारतीष भाषा को सीखना चाहिए इसका अखिल भारतीय सेवाओं आदि के लिए लाभ है, क्योंकि सेवा क्षेत्र में दूरस्थ अन्य प्रदेश में तैनाती होने पर वहां की भाषा को सीखना और उस भाषा में काम करना पड़ता है। उन्होंने आगे कहा कि भारत में 22 भाषाओं के आलावा लगभग 2200 बोलिया है, जो भारत की विविधता को दर्शाता है। सम्बोधन के अगले क्रम विशिष्ट अतिथि मुख्य विकास अधिकारी मीरजापुर लक्ष्मी बीएस ने आजादी के आन्दोलन में भारतीय भाषा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा ग कि भारतीय भाषाएं अलग-अलग होते हुए भी सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है यह भाषाएं अलग-अलग नहीं है, बल्कि हम सभी के लिए है। महाकवि सुब्रण्यम भारती के विचारों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बिना भाषा के छात्र न तो गणित और न ही अन्य कोई विषय समझ पायेंगे, इसके लिए भाषा का ज्ञान अत्यन्त ही आवश्यक है। कार्यक्रम के अंत में जिला विद्यालय निरीक्षक, द्वारा सभी अतिथियों, कार्यक्रम में सहयोगी प्रधानाचार्य, शिक्षकों पत्रकारो एवं छात्रों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए भारतीय भाषा उत्सव के महत्व को बताते हुए कहा कि भारत एक विविधताओं का देश है। उक्त अवसर पर शिक्षा विभाग से प्रधानाचार्य जीआईसी राज कुमार दीक्षित , प्रधानाचार्य आर्य कन्या कालेज रीता वर्मा , प्रधानाचार्य सुंदर मुंदर कालेज सुनीता , महेन्द्र सोनकर अन्य शिक्षक गण एवम मीडिया से वरिष्ठ पत्रकार कृष्ण गोपाल वर्मा , इमरान , अमित तिवारी आदि उपस्थित रहे।

विद्यालय परिसर में अर्द्धनग्न घूम रहे शिक्षक का वीडियो वायरल

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। बेसिक शिक्षा विभाग की मुश्किलें कम नहीं हो रहीं। बच्चों को एमडीएम में सूखी रोटी, नमक-रोटी परोसने और फिर विद्यालय का गेट गिरने से बच्चे की मौत व तालाब से पानी पीते बच्चों के बाद की जांच के लिए चोपन बीईओ को जिम्मेदारी सौंपी है। वायरल वीडियो चोपन ब्लाक के ही अबाड़ी प्राथमिक विद्यालय का बताया जा रहा है। यहां तैनात एक शिक्षक शरीर पर गमछा लपेटे विद्यालय में घूम रहे हैं। परिसर में ही कार भी खड़ी है, जिसके नीचे रबर पाइप पड़ी है। बताते हैं कि गुरुजी ने कार धुलने के लिए विद्यालय में यह रूप धरा है। मामले को गंभीरता से लेते हुए बीएसए हरिबंश कुमार ने चोपन बीडीओ को विद्यालय पहुंचकर जांच के निर्देश दिए। मंगलवार को बीईओ ने विद्यालय में बच्चों व शिक्षकों से जानकारी भी ली। इसकी रिपोर्ट बीएसए को प्रेषित कर दी है। बीएसए ने बताया कि विद्यालय के शिक्षक के वायरल हो रहे वीडियो व फोटो के बारे में बीईओ को जांच के लिए भेजा गया था। उनकी रिपोर्ट का अवलोकन कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

अब स्कूल परिसर में शिक्षक की अर्द्धनग्न तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। शरीर पर गमछा लपेटे गुरुजी विद्यालय में घूम रहे हैं तो बगल में ही पढ़ाई कर रहे बच्चे हैरत भरी निगाहों से उन्हें निहार रहे हैं। फिलहाल बीएसए ने इस वीडियो व तस्वीर

सड़क हादसे में सफाई कर्मी की मौत

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। जिले नौगढ़ के पास सोमवार की रात हुए सड़क हादसे में बाइक सवार युवक की मौत हो गई। वह चुर्क नगर पंचायत में संविदा सफाई कर्मी के पद पर कार्यरत था। हादसे में उसके साथ बाइक पर मौजूद दो बच्चे समेत चार लोग घायल हो गए। उधर, युवक के निधन की खबर मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। नगर के सफाई कर्मचारियों में शोक छा गया।नगर पंचायत चुर्क वार्ड नंबर एक निवासी लालब्रत (38) किसी कार्य सेबरवाडीह नौगढ़ गए थे। सोमवार को चेयरमैन पति के निधन की सूचना के बाद देर रात वह बाइक से लौटने लगे। उनके साथ बाइक पर भाई लक्ष्मण, अरुण, पुत्र किशन व रोशन भी सवार थे। जिले की सीमा पर स्थित पुलिया पर बाइक

अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गई। हादसे में सभी सवारों को गंभीर चोट आई। राहगीरों की मदद से उन्हें नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने लालब्रत को मृत घोषित कर दिया। दो घायलों की गंभीर हालत होने पर वाराणसी रेफर कर दिया गया।

बिजली कटौती पर सड़क जाम

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। करीब 20 दिनों से बेतहाशा बिजली कटौती से जूझ रहे लोगों का गुस्सा मंगलवार को फूट पड़ा। कटौती से आजिज लोगों ने मंगलवार को स्थानीय कस्बे के श्रीराम चौराहे पर चक्काजाम कर दिया। मौके पर पहुंची पुलिस ने प्रदर्शनकारियों की

एनटीपीसी रिहंद के अफसरों से बात कराकर आपूर्ति शुरू करा जाम समाप्त कराया। प्रदर्शनकारियों ने चेतावनी दी कि अगर 16 दिसंबर तक बिजली व्यवस्था को दुरुस्त नहीं किया गया तो दोबारा प्रदर्शन को बाध्य होंगे। जाम से करीब सात घंटे तक आवागमन प्रभावित रहा। बीजपुर, डोडहर व आसपास के इलाकों में करीब 20 दिनों से बिजली आपूर्ति बाधित है। इससे रोजमर्रा के कामकाज प्रभावित हैं। व्यवसाय पर भी असर पड़ रहा है। कटौती से क्षुब्ध लोगों ने सोमवार की रात बीजपुर के श्रीराम चौराहे पर चक्काजाम कर नारेबाजी की थी, लेकिन कुछ देर बाद ही उन्हें समझा-बुझाकर शांत करा दिया गया। मंगलवार की सुबह फिर महिलाएं बीजपुर-रेणुकूट मार्ग पर चौकी, टेबल लगाते हुए धरने पर बैठ गईं। महिलाओं ने एनटीपीसी प्रबंधन के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। कुछ ही देर में कस्बे के व्यापारी भी उनके समर्थन में धरने पर पहुंच गए। जाम से बीजपुर-रेणुकूट मार्ग पर आवागमन ठप हो गया। मामले की सूचना पर पहुंची पुलिस ने लोगों को समझाने का प्रयास किया, लेकिन वह आपूर्ति व्यवस्था में सुधार की जिद पर अड़े रहे। थाने के इंस्पेक्टर क्राइम अशोक कुमार यादव ने एनटीपीसी रिहंद प्रबंधन से बात कर स्थानीय थाने में प्रदर्शनकारियों से वार्ता कराई। घंटे भर चली बैठक के दौरान बिजली व्यवस्था बहाल कराई और चक्काजाम समाप्त किया। बैठक में एनटीपीसी रिहंद प्रबंधन की और से वरिष्ठ प्रबंधक सीएसआर अरविंद शुक्ला व एजीएम इलेक्ट्रिकल एसके सुधाकर सहित अन्य लोग पहुंचे थे। व्यापारियों ने उच्चाधिकारियों के नाम पत्र भेज कर समस्या से निजात दिलाने की मांग की। चेतावनी दी कि एनटीपीसी रिहंद प्रबंधन 16 दिसंबर तक बिजली व्यवस्था को दुरुस्त नहीं कराता तो 17 दिसंबर से दोबारा धरना प्रदर्शन के लिए बाध्य होंगे। ठेका रद्द होने के बाद बढ़ा संकट कई वर्षों से एनटीपीसी रिहंद प्रबंधन स्थानीय रहवासियों को ठेकेदार के माध्यम से बिजली आपूर्ति करता रहा है। विगत 20 नवंबर को ठेका अवधि खत्म होने के बाद से नया आवंटन नहीं हुआ है। इसके बाद से ही व्यवस्था लड़खड़ाई है। पूर्व में एक दिसंबर को भी डोडहर गेट पर ग्रामीणों ने प्रदर्शन कर बिजली व्यवस्था में सुधार की मांग की थी। बावजूद किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। काफी संख्या में लोग बिना कनेक्शन के बिजली जला रहे हैं। इससे ओवरलोड होने से बार-बार आपूर्ति ट्रिप कर जा रही है। इसका असर आपूर्ति पर पड़ रहा है। समस्या के समाधान का पूरा प्रयास किया जा रहा है।

डीआईजी ने मण्डल के तीनों जनपदों के पुलिस पेंशनरों के साथ गोष्ठी कर उनके समस्याओं व सुझावों को सुनकर दिया निर्देश

(आधुनिक समाचार सेवा)
मिर्ज़ापुर। डीआईजी रेंज 'आर0पी0 सिंह ने मिर्जापुर के पुलिस लाईन सभागार कक्ष में मंडल के तीनों जनपदों के पुलिस पेंशनर्स के साथ गोष्ठी कर उनके समस्याओं एवम सुझावों को सुनकर दिशा निर्देश दिया।उन्होंने कहा कि पुलिस पेंशनरों की इस गोष्ठी के माध्यम से सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारियों/

कर्मचारियों के बीच एक दूसरे से दूरी कम करने का सार्थक प्रयास है। गोष्ठी में डीआईजी नेउनकी समस्याओं/सुझावों को सुना ।उन्होंने कहा कि पेशनरो से अपेक्षा की जाति है कि वह पुलिस की कार्य प्रणाली से भलि-भांति परिचित होते है। असामाजिक तत्वों के संबंध मे कानून व्यवस्था को प्रभावित करने वाली किसी प्रकार की सूचना प्राप्त होने पर उच्चाधिकारियों को सूचित करते हुये उनके द्वारा सहयोग प्रदान किया जाय। उनकी कोई व्यक्तिगत समस्या हो तो वह अपनी बात संबंधित थाने एवं उच्चाधिकारियो के संज्ञान मे निःसंकोच अपनी समस्या से अवगत करायें। उन्होंने समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्ष को निर्देशित किया कि जब भी कोई सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारी उनके थानें पर उपस्थित हो तो उसकी समस्याओं के शीघ्र निस्तारण किये जाने हेतु तत्काल कार्यवाही करें साथ ही थानों पर बनाए गए पुलिस पेंशनर्स रजिस्टर को अध्यावधिक रखा जाए। उन्होंने गोष्ठी के दौरान दिए गए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिया जिसमें जनपद के रिटायर पुलिस कर्मियों के चिकित्सा प्रतिपूर्ति के संबंध में त्वरित निस्ता एवमङ्गपुलिस पेन्शनर्सङ्ग के नाम से व्हाटसएप ग्रुप बनाकर संचालन प्रारम्भ किया जाय ताकि पुलिस पेन्शनर्स के उनके पेंन्शन, चिकित्सा प्रतिपूर्ति तथा अन्य विभागीय समस्याओं को त्वरित निस्तारित किया जा सके तथा उनको अनावश्यक भाग-दौड़ न लगाना पड़े।तथा रिटायर्ड पुलिस पेन्शनर्स के डिजिटल पहचान पत्र के बनने के सम्बंध में शिकायत प्राप्त हुई जिस पर त्वरित संज्ञान लेते हुए पहचान पत्र के बनने के सम्बंध में आ रही कमियों को दूर कर शीघ्र ही पहचान पत्र निर्गत करने के सम्बंध में निर्देशित किया ।उन्होंने पेंशनर्स के वाट्सएप ग्रुप के समुचित उपयोग के साथ ही पुलिस विभाग से सेवानिवृत्त हुए 'पेन्शनर्स' से यह भी अनुरोध किया कि समय-समय पर अपने अनुभव के आधार पर पुलिस की सहायता करें ताकि उनके अनुभवों का उपयोग कर नई पुलिस प्रणाली को और भी सुदृढ़ बनाया जा सके।उक्त अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक नक्सल महेश सिंह अत्रि एवम अन्य पुलिस अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

तीन स्वास्थ्य केंद्रों पर लगी उन्नत हैंड वाशिंग यूनिट

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। अस्पतालों में उपचार के

लिए आने वाले मरीजों के सेहत और संक्रमण से सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए यूनिसेफ और स्वास्थ्य विभाग ने मंगलवार को तीन स्वास्थ्य केंद्रों पर उन्नत हैडवाशिंग यूनिट लगाया। नगरीय पीएचसी के अलावा नगवां सीएचसी व खलियारी पीएचसी पर लोगों को यह सुविधा मिलेगी। जिला क्वालिटी सेल के धमेंद्र यादव और यूनिसेफ के राज्य सलाहकार (वाश) सतेंद्र कुमार के नेतृत्व में टेक्निकल टीम ने मंगलवार को नगरीय प्राथमिक स्वास्थ्य पर पहली यूनिट स्थापित किया। इसके साथ ही नगवां सीएचसी पर प्रभारी अधीक्षक डॉ. एसके सिंह की उपस्थिति में अस्पताल में दो उन्नत हैंडवाशिंग यूनिट लगाई गई। इसके बाद प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खलियारी में भी एक यूनिट की स्थापना की गई। क्वालिटी सेल धमेंद्र यादव ने बताया कि इसकी स्थापना से इन स्वास्थ्य केंद्रों पर संक्रमण के खतरे को कम करने में मदद मिलेगी। यूनिसेफ के फिल्ड सुपर वाइजर अवनीश कुमार ने बताया कि संचारी बीमारियों के लिए जिला अति संवेदनशील रहा है। ऐसे में समस्याओं से राहत दिलाने के लिए 29 स्थानों पर यूनिसेफ की जल एवं स्वच्छता इकाई ने उन्नत हैंड वाशिंग यूनिट लगा रहा है। इसकी स्थापना से यहां पर चिकित्सकों के साथ ही मरीजों को हाथ को साबून से धोने की सुविधा होगी। इससे संक्रमण की रोकथाम में मदद मिलेगी। इस मौके पर डॉ. प्रशांत सिंह, फिल्ड सुपर वाइजर यूनिसेफ जय सिंह, एएनएम सरस्वती सहित अन्य मौजूद रही।

अध्यक्ष पर दो और सचिव पद के लिए चार दावेदार

(आधुनिक समाचार सेवा)
मिर्ज़ापुर। डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों के चुनाव में सोमवार को नामांकन पत्रों की जांच और नाम वापसी की प्रक्रिया पूरी कर ली गई। इसके बाद चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों की सूची जारी कर दी गई। इसमें कुछ पदों पर निर्विरोध निर्वाचन तय बताया जा रहा है। चुनाव अधिकारी अजय कुमार सिंह ने सहयोगी चुनाव अधिकारी विनोद कुमार सिंह प्रथम और विश्वनाथ प्रताप दुबे के साथ दोपहर एक बजे तक नामांकन पत्रों की जांच की। जांच में सभी नामांकन पत्र वैध मिले। इसके बाद नामांकन पत्र वापसी की प्रक्रिया शुरू हुई। इस दौरान सदस्य कार्यकारिणी (5/3) के पद के लिए नामांकन करने वाले अर्जुन प्रकाश यादव ने अपना पर्चा वापस ले लिया। इसके बाद इसके दो पदों पर बृजेश पाठक और विमल कुमार का निर्विरोध होना तय है। सदस्य कार्यकारिणी (15/7) के दो पदों पर अवधेश कुमार द्विवेदी और राजेंद्र प्रसाद दुबे का भी निर्विरोध निर्वाचन तय है। इसके अलावा सदस्य कार्यकारिणी (20/10) के पांच पदों के लिए विनोद कुमार सिंह, नरेंद्र बहादुर सिंह, अरुण चंद्र पांडेय, काशीनाथ सिंह द्वितीय, रमाशंकर का भी निर्विरोध निर्वाचन तय है। कोषाध्यक्ष पद पर प्रभु नारायण सिंह, पुस्तकालय अध्यक्ष पद पर राजीव कृष्ण सिंह और कनिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर रविंद्र कुमार यादव का भी निर्विरोध चुना जाना तय है। अध्यक्ष पद पर रामकृष्ण द्विवेदी व राजकुमार सिंह गौतम, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर रामवृक्ष सिंह व प्रदीप कुमार श्रीवास्तव, सचिव पद पर कैलाश यादव, अवधेश कुमार द्विवेदी, प्रवीण कुमार दीक्षित, संजय कुमार चौधरी चुनाव मैदान में हैं। उप सचिव (सामान्य) पद पर संतोष कुमार ऊमर व अतुल कुमार त्रिपाठी, उप सचिव (प्रशासन) पद पर महेंद्र यादव व रूप नारायण अग्रहरि, वाटिका अध्यक्ष पद पर अभिनव गुप्ता, कमला शंकर मिश्र, लेखा निरीक्षक पद के लिए विनोद कुमार सिंह व अनूप कुमार चुनाव मैदान में हैं। चुनार अधिकारी अजय सिंह ने बताया कि 16 दिसंबर को टेंडर मतदान और 17 को मतदान होगा। मतदान के दिन सभी सदस्यों को अपना फोटो पहचान पत्र साथ लाना अनिवार्य है।

कोहरौल ने बांसी को पराजित किया

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। बीना क्षेत्र के घरसड़ी (जवाहर नगर) स्थित डॉ. आंबेडकर विद्यालय प्रांगण में मंगलवार को अंतर क्षेत्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता का पहले मैच में कोहरौल की टीम ने बांसी को परास्त कर दिया। प्रतियोगिता का शुभारंभ घरसड़ी के प्रधान प्रतिनिधि ओम नारायण व चंदुआर ग्राम प्रधान योगेंद्र कुमार द्वारा संयुक्त रूप से किया। अतिथियों ने बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के छाया चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित किया। इसके बाद खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर प्रतियोगिता शुरू करने का औपचारिक ऐलान किया। उद्घाटन मैच कोहरौल व बांसी के मध्य खेला गया। कोहरौल ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित आठ ओवर में बल्लेबाज शहादत 22 रन, राहुल 15 रन की मदद से सात विकेट के नुकसान पर 70 रन स्कोर खड़ा किया। जवाब में उतरी बांसी टीम निर्धारित ओवर में छह विकेट खोकर 56 रन पर सिमट गई। इस तरह कोहरौल टीम 14 रन से मैच जीत लिया। इस दौरान मुख्य रूप से विद्यालय प्रधानाचार्य धनेश पांडेय, राकेश रोशन, चंदुआर क्षेत्र पंचायत सदस्य हाजरा बेगम, आकाश कुमार, विस्थापित नेता राजन भारती, सुजीत कुमार, कन्हैया, राजू सहित तमाम लोग मौजूद रहे। 53 रनों पर ढेर हो गई फायर इलेवन की टीम तापीय परियोजना के सीआईएसएफ मैदान में जारी इको कप में मंगलवार को फायर इलेवन और रोरिंग टाइगर्स के बीच मुकाबला हुआ। रोरिंग टाइगर्स की टीम विजेता रही। फायर इलेवन की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। 15 ओवर खेलने के बाद भी टीम महज 53 रन बना सकी। इसके बाद 54 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए रोरिंग टाइगर्स की टीम ने 5.5 ओवर में ही मैच जीतकर खिताब अपने नाम कर लिया। टीम के सद्दाम हुसैन ने सर्वाधिक तीन विकेट लिए। उन्हें मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया।

दो लाख श्रद्धालुओं ने मां शीतला का किया दर्शन

(आधुनिक समाचार सेवा)
मिर्ज़ापुर। मंगला आरती के बाद उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़मंदिर परिसर में साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण फिसलन बनी रही। मां शीतला के दरबार में क्षेत्रीय तथा पड़ोसी जिले प्रयागराज, सोनभद्र, भदोही, वाराणसी आदि से दर्शनार्थियों के आने का तांता लगा रहा। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए प्रशासन की ओर से गड़बड़ा हनुमान मंदिर के पास, सेमरा रोड व अमदह मार्ग पर बैरियर लगाकर बड़े वाहनों को मेला क्षेत्र में जाने से रोक दिया गया। शाम तक दो लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने मां शीतला का दर्शन-पूजन कर लिया था। गड़बड़ा धाम में सोमवार को दो लाख से अधिक भक्तों ने मां शीतला का दर्शन-पूजन किया। भोर में मंगला आरती के पश्चात श्रद्धालुओं की भीड़ मां शीतला के दर्शन पूजन के लिए उमड़ पड़ी। श्रद्धालु सेवटी नदी में स्नान करके हाथ में नारियल, चुनरी, माला फूल, हलवा पूड़ी आदि लेकर कतारबद्ध होकर मां शीतला की एक झलक पाने के लिए लालायित रहे। दर्शन के पश्चात भक्तों ने गंवई मेला का आनंद उठाया। मंदिर परिसर में साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण फिसलन बनी रही। मां शीतला के दरबार में क्षेत्रीय तथा पड़ोसी जिले प्रयागराज, सोनभद्र, भदोही, वाराणसी आदि से दर्शनार्थियों के आने का तांता लगा रहा। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए प्रशासन की ओर से गड़बड़ा हनुमान मंदिर के पास, सेमरा रोड व अमदह मार्ग पर बैरियर लगाकर बड़े वाहनों को मेला क्षेत्र में जाने से रोक दिया गया। शाम तक दो लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने मां शीतला का दर्शन-पूजन कर लिया था। मंदिर परिसर में जगह-जगह श्रद्धालु भगवान सत्यनारायण कथा सुनते दिखे। मंदिर में बाहर से आए कुछ पुजारियों द्वारा दर्शनार्थियों से जबरन पैसे वसूले जाने से श्रद्धालुओं में नाराजगी रही। मेला क्षेत्र में माला-फूल, प्रसाद, चुनरी, श्रृंगार तथा खिलौने की दुकानों पर भीड़ लगी रही। दर्शनार्थियों के साथ आए बच्चों ने सर्कस, झूला आदि का खूब आनंद उठाया। दर्शनार्थियों ने गड़बड़ा धाम मेले की प्रसिद्ध बांस के बर्तन, लकड़ी के सामान, लाई, ढूंढा सामानों की जमकर खरीदारी की।

बस की चपेट में आने से बालक की मौत

(आधुनिक समाचार सेवा)
मिर्ज़ापुर। देहात कोतवाली क्षेत्र के बरकछा पहाड़ी पर सोमवार को दोपहर में ट्यूशन पढ़ने जाने समय सड़क पार कर रहा बालक बस की चपेट में आ गया। बस की चपेट में आने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। परिजनों के कहने पर पुलिस बालक को मंडलीय अस्पताल ले गई। जहां डॉक्टर ने बालक को मृत घोषित कर दिया। घटना के बाद बस चालक मौके से गाड़ी लेकर फरार हो गया। पुलिस आस-पास के सीसीटीवी फुटेज के आधार पर बस चालक की तलाश में जुटी है।

ाड़िहान थाना क्षेत्र के उत्तर देवरी निवासी भागवत मौर्या पिछले कई साल से गांव के अन्य लोगों के साथ बरकछा पहाड़ी पर मड़ई बनाकर रहते हैं। बरकछा चौकी से पहले सड़क किनारे मड़ई बनाकर भागवत पत्नी और बच्चों के साथ रहते हैं। भागवत और उनकी पत्नी मजदूरी करके परिवार का पालन-पोषण करते हैं। भागवत का पुत्र विशाल मौर्या उर्फ बब्बल (8) पास के सरकारी स्कूल में कक्षा दो में पढ़ता था। पास में एक व्यक्ति बच्चों को ट्यूशन पढ़ाता है। सोमवार को दोपहर बाद वह ट्यूशन पढ़ने जाने के लिए सड़क पार कर रहा था। इस बीच मड़िहान से मिर्जापुर की ओर जा रही प्राइवेट बस ने बालक को टक्कर मार दिया। टक्कर लगने के बाद बालक बस के नीचे आ गया। बस चालक मौका पाकर फरार हो गया। हादसे में बच्चे की चीख सुनकर परिजन दौड़ पड़े। हादसे में बालक की दर्दनाक मौत हो गई।

ऑस्ट्रेलिया ने 419 रन के अंतर से जीता दूसरा टेस्ट, 2 0 से किया सीरीज पर कब्जा

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। टेस्ट की नंबर वन टीम ऑस्ट्रेलिया ने दूसरे टेस्ट में वेस्टइंडीज को 419 रन के बड़े अंतर से हरा दिया है। वेस्टइंडीज पूरी टीम 77 रन बनाकर आउट हो गई। ऑस्ट्रेलिया ने पहला टेस्ट 164 रन से जीता था। मैच के बाद मिचेल स्टार्क ने कहा कि इस समर की शुरुआत अच्छी हुई है, हमें एक 214 रन बनाकर आउट हो गई थी। तेगनारायण चंद्रपॉल ने सर्वाधिक 47 जबकि एंडरसन फिलीप ने 43 रन की पारी खेली। पहली पारी की आधार पर ऑस्ट्रेलिया को 297 रन

की दूसरी पारी केवल 77 रन बनाकर आउट हो गई। इस जीत के साथ ही ऑस्ट्रेलिया ने 2 मैच की टेस्ट सीरीज पर 2-0 से कब्जा कर लिया है वेस्टइंडीज टीम ने मैच के चौथे दिन 4 विकेट खोकर 38 रन से आगे खेलना शुरू किया, लेकिन केवल 90 मिनट के भीतर या दो दिन अतिरिक्त (आराम) मिला है जो अच्छा है।पहली पारी में मार्नस लबुशाने के 163 और ट्रेविस हेड के 175 रन की शानदार पारी के कारण ऑस्ट्रेलिया ने 7 विकेट खोकर 511 रन बनाकर पारी घोषित की थी। वेस्टइंडीज की खराब बल्लेबाजी जवाब में वेस्टइंडीज की टीम केवल की बढ़त मिली और दूसरी पारी में ऑस्ट्रेलिया ने 6 विकेट खोकर 199 रन बनाकर पारी घोषित कर दी।वेस्टइंडीज को जीत के लिए 497 रन का लक्ष्य मिला, लेकिन पूरी टीम केवल 77 रन बनाकर आउट हो गई और ऑस्ट्रेलिया ने यह मैच 419 रन के बड़े अंतर से जीत लिया।

वर्ल्ड रिकॉर्ड पारी खेलने के बाद भी इशान किशन को हो रहा है पछतावा, बोले- बना सकता था

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। बांग्लादेश के खिलाफ इशान किशन ने एक ऐसी पारी खेली जिसे वह ताउम्र नहीं भूल पाएंगे। वह पहले बल्लेबाज बने जिन्होंने अपने करियर के पहले ही शतक को दोहरे शतक में बदला। इस पारी से पहले उनका छुआ था।रिकॉर्ड तोड़ पारी खेलने के बाद भी इशान किशन को एक बात का पछतावा है, जिसका खुलासा उन्होंने मैच के बाद किया। दरअसल इशान किशन जब 210 रन के स्कोर पर आउट हुए तब भारत की पारी के केवल 35 ओवर ही हुए थे। इशान ने मैच के बाद किशन ने कहा विराट कोहली के साथ बल्लेबाज करने को लेकर कहा कि जब मैं 90 के स्कोर पर था, तो उन्होंने शांत रहने में मेरी मदद की। मैं छक्के के साथ शतक पूरा करना चाहता था, लेकिन उन्होंने कहा कि यह तुम्हारा पहला शतक है सिंगल लो इशान किशन

उच्चतम स्कोर 93 रन था और अब वह 200 क्लब में शामिल होने के साथ-साथ सबसे तेज दोहरा शतक लगाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं उन्होंने 200 रन का आंकड़ा केवल 126 गेंद में पूरा किया। इससे पहले यह रिकॉर्ड यूनिवर्स बॉस क्रिस गेल के नाम था, जिन्होंने जिम्बाब्वे के खिलाफ 138 गेंद पर 200 रन के आंकड़े को कहा कि मैं जब आउट हुआ तब भी 14.1 ओवर बाकी थे। मैं 300 रन मार सकता था। 200 क्लब में शामिल होने के बाद उन्होंने कहा कि मैं खुद को सम्मानित महसूस कर रहा हूं कि मेरा नाम लीजेंड के साथ लिया जा रहा है।ठ इसके अलावा इशान किशन ने कहा कि मैच में मेरा इंटेंट क्लीयर था कि खराब गेंद को हिट करना है इशान ने बांग्लादेश के खिलाफ अपनी इस पारी को खास बताते हुए ट्वीट किया है। उन्होंने लिखा है कि आज की इस पारी को शब्दों में बयां नहीं कर सकता। लोगों से जो मुझे प्यार मिल रहा है, उसके लिए मैं अभिभूत हूं। यह इनिंग हमेशा के लिए मेरे दिल में रहेगा। एक ऐसा दिन जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा। आज के मैच का पल हमेशा के लिए मेरे साथ रहेगा।

बांग्लादेश के खिलाफ टीम इंडिया खेलेगी आक्रमक क्रिकेट, कप्तान राहुल ने दिए संकेत

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। वनडे सीरीज गंवाने के बाद टीम इंडिया अब बांग्लादेश के खिलाफ 2 मैच की टेस्ट सीरीज खेलने के लिए पूरी तरह से तैयार है। पहला टेस्ट मैच 14-18 दिसंबर

जबकि दूसरा टेस्ट 22-26 दिसंबर के बीच खेला जाएगा। भारत के लिए खास है यह सीरीज बांग्लादेश के खिलाफ भारत के लिए यह टेस्ट हर हाल में जीतना जरूरी है। यदि टीम इंडिया वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के दौड़ में बने रहना चाहती है तो उसे यह सीरीज जीतनी होगी। इसके लिए कप्तान केएल राहुल ने टीम की रणनीति पर बात की है। मीडिया से बात करते हुए केएल राहुल ने कहा कि ठटेस्ट चैंपियनशिप फाइनल का क्वालीफिकेशन ध्यान में है इसलिए हमलोगों को आक्रमक होना पड़ेगा। हम जानते हैं कि इस वक्त किस पोजिशन पर हैं और हमें क्वालीफाई करने के लिए क्या करना होगा? हम हर दिन, हर सेशन स्थितियों का जायजा लेंगे और उसी हिसाब से खेलेंगे और अपना बेस्ट देंगे।ठहालांकि, उन्होंने कहा कि हम किसी माइंडसेट के साथ नहीं उतरेंगे। हां इस मैदान का अपना एक इतिहास है और आप उसी आधार पर चीजों का मूल्यांकन करेंगे। कम से कम हमारे लिए तो हम वहां जाएंगे और आक्रामक और बहादुरी के साथ खेलेंगे, कोशिश करेंगे कि मैच में रिजल्ट निकले। केएल राहुल से जब रोहित शर्मा के इंजरी के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि 'रोहित हमारे लिए महत्वपूर्ण खिलाड़ी हैं। वह अनुभवी खिलाड़ी हैं और हमारे टीम के कप्तान हैं। वह ऐसे खिलाड़ी हैं जिसे टीम मिस करेगी। हम आशा करते हैं कि वह जल्द रिकवर करेंगे और दूसरे टेस्ट के लिए टीम से जुड़ेंगे। आपको बता दें कि रोहित को दूसरे वनडे मैच के दौरान फील्डिंग करते हुए चोट लग गई थी, जिसके बाद वह इलाज के लिए मुंबई में हैं। बीसीसीआइ की तरफ से पहले टेस्ट में उनके रिप्लेसमेंट का एलान तो कर दिया गया है, लेकिन दूसरे टेस्ट के बारे में अभी कुछ नहीं कहा गया।

इंग्लैंड को पीट कर फ्रांस सेमीफाइन में, मोरक्को से होगा मुकाबला

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। गत चैंपियन फ्रांस ने ओलिवर जिरोड और आरेलियन टचौमेनी के गोल के दम पर आखिरी क्वार्टर फाइनल मुकाबले में इंग्लैंड को 2-1 से हराकर सेमीफाइनल में क्रास पर शानदार हेडर लगाते हुए फ्रांस को शानदार शुरुआत दिलाई। 52वें मिनट में टचौमेनी ने पेनाल्टी एरिया में बुकायो साका पर फाउल किया और इंग्लैंड को पेनाल्टी दी गई। पेनाल्टी लेने आए कप्तान हैरी जब थियो हर्नांडिज ने मैसन माउंट को पेनाल्टी बाक्स में गिरा दिया।इंग्लिश टीम के लिए एक बार फिर हैरी केन पेनाल्टी लेने आए, लेकिन इस बार वह चूक गए। उनका शाट गोल पोस्ट के ऊपर से निकल

जगह बनाई। जिरोड ने इस मुकाबले में अपना 53वां अंतरराष्ट्रीय गोल दागा और वह फ्रांस की ओर से सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी बन गए। जिरोड ने थियेरी हेनरी के 52 गोल के रिकार्ड को तोड़ा। अल बायत स्टेडियम में शनिवार देर रात खेले गए मुकाबले में दोनों टीमों के बीच कांटे की टक्कर देखने को मिली। 17वें मिनट में टचौमेनी ने एंटोनियो ग्रीजमैन के केन ने टीम को बराबरी पर ला दिया। केन का भी यह 53वां अंतरराष्ट्रीय गोल था। 70वें मिनट में इंग्लैंड के पास बढ़त बनाने का मौका था, लेकिन हैरी मैगुएर का हेडर गोल पोस्ट को छूकर निकल गया। आठ मिनट बाद कार्नर से ग्रीजमैन के क्रास पर जिरोड ने हेडर लगाते हुए फ्रांस के लिए दूसरा गोल दाग टीम को बढ़त दिला दी। इंग्लैंड को 82वें मिनट में पेनाल्टी मिली गया। इसके साथ ही फ्रांस की जीत भी सुनिश्चित हो गई। सेमीफाइनल में मोरक्को से भिड़ेगी फ्रांस सेमीफाइनल मुकाबले 14 और 15 दिसंबर को जबकि फाइनल मुकाबला 18 दिसंबर को खेला जाएगा। फ्रांस की बात करें तो दूसरे सेमीफाइनल मुकाबले में फ्रांस को मुकाबला मोरक्को से होगा, जिसने सेमीफाइनल में पहुंचकर इतिहास रचा है।

कभी नहीं सोचा था कि आइओए अध्यक्ष बनूंगी

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। ट्रैक एवं फील्ड की दिग्गज खिलाड़ी पीटी उषा ने शनिवार को भारतीय ओलंपिक संघ (आइओए) की पहली महिला प्रमुख चुने जाने के बाद कहा कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि वह एक दिन आइओए अध्यक्ष बनेंगी। चुनाव के दौरान 58 वर्षीय

उषा को आधिकारिक तौर पर शीर्ष पद के लिए चुना गया जिससे भारतीय खेल प्रशासन में एक नए अध्याय की शुरुआत हुई। उषा ने कहा,'अपने पूरे जीवन में मैंने खेलों के बिना सिर्फ 13 साल गुजारे हैं। अन्यथा मैं एक खिलाड़ी, कोच और प्रशासक के रूप में विभिन्न भूमिकाओं में खेल के साथ जुड़ी रही हूं।मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं एक दिन आइओए प्रमुख बनूंगी।

राशिफल

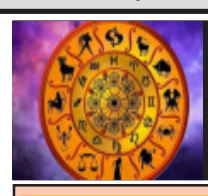

मेष-: आज आपका दिन सुखद रहेगा. आप जिस भी काम को पूरा करना चाहते हैं, वह काम पूरा हो जाएगा। किसी पुराने मित्र से मिलने उनके घर जा सकते हैं।

वृष-: स्टूडेंट्स के लिए आज का दिन अच्छा है. अभ्यास में सफलता मिलेगी और उन्नति का नया मौका मिलेगा। स्वास्थ्य और प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहें। जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य प्राप्त होगा।

मिथुन-: आज आपका पूरा जोर पारिवारिक और घरेलू जिम्मेदारियों पर रहेगा. परिवार में अधिक समय बिताएंगे और घर की जरूरतों को समझकर उन पर खर्च करेंगे।

कर्क-: आज आपका दिन ठीक रहेगा. ऑफिस में किसी जरूरी काम को पूरा करने के लिए पिछली कंपनी का अनुभव काम आ सकता है। किसी भी नए व्यापार में पैसा लगाने से आपको बचना चाहिए।

सिंह-: आज के दिन किसी स्त्री संबंधी के कारण आपको तनाव हो सकता है. हनुमान चालीसा का पाठ करने से आपके जीवन के सभी संकट दूर होंगे और परिवार में चारों तरफ से खुशहाली आएगी।

कन्या-: आज परेशानियों से निजात मिलेगी. मानसिक परेशानियां खत्म होंगी और आज कुछ बड़े मामलों का फैसला होगा। इससे आपकी योजनाओं को गति मिलेगी।

तुला-: दिन की शुरुआत नाजुक रहेगी, इसलिए शुरुआत में कोई बड़ा काम न करें. लेकिन जैसे-जैसे दिन चढ़ेगा दांपत्य जीवन में खुशियां आएंगी।

वृश्चिक-: आज आपका दिन सामान्य रहेगा. आपका मन सामाजिक कार्यों की ओर हो सकता है। साथ ही पड़ोसियों के बीच आपके किसी पुराने काम की तारीफ हो सकती है।

धनु-: आज पारिवारिक जिम्मेदारियों में वृद्धि होगी. जीवनसाथी को स्वास्थ्य विकार हो सकता है। कार्यक्षेत्र में विस्तार और नौकरी में स्थान परिवर्तन की संभावना है।

मकर-: आज का दिन आपको काफी व्यस्त रखेगा. अचानक कोई अटका हुआ काम बनेगा और कोई चलता हुआ काम रुक सकता है जिससे आप न तो ज्यादा खुश होंगे और न ही ज्यादा दुखी।

कुंभ-: आज आपके मन में नए विचार आ सकते हैं. किसी काम को लेकर आप कोई नई योजना भी बना सकते हैं। आय के स्रोतों में वृद्धि हो सकती है।

मीन-: आज परिवार में अप्रसन्नता के कारण घर का वातावरण प्रदूषित रहेगा. आत्मसंतुष्ट बनो। क्रोध की अधिकता से बचें। नौकरी में अधिकारियों से अनबन हो सकती है।

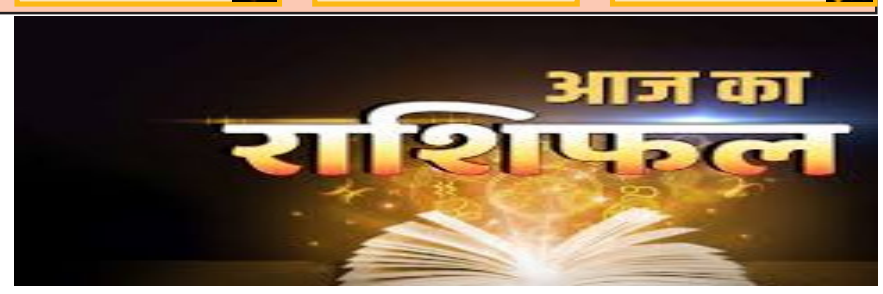

ऑस्ट्रेलिया में वेस्टइंडीज ने बनाया न्यूनतम स्कोर

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। एडिलेड में 419 रन से जीती स्टीव स्मिथ की टीमवेस्टइंडीज को जीत के लिए 497 रन का लक्ष्य मिला। उसकी टीम दूसरी पारी में 77 रनों पर सिमट गई। यह ऑस्ट्रेलिया की जमीन पर टेस्ट में उसका न्यूनतम स्कोर में 214 रन ही बना सकी। इस तरह कंगारू टीम को पहली पारी में 297 रन की बढ़त हासिल हुई। दूसरी पारी में 77 रनों पर सिमटी वेस्टइंडीज की टीम ऑस्ट्रेलिया ने दूसरी पारी में छह विकेट पर 199 रन बनाए। वेस्टइंडीज को जीत के लिए 497 रन का लक्ष्य मिला।

है। इससे पहले 1952 में उसने सिडनी में 78 रन बनाए थे। ऑस्ट्रेलिया ने वेस्टइंडीज के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरीज को 2-0 से अपने नाम कर लिया। उसने एडिलेड में खेले गए दूसरे को 419 रनों से जीत लिया। टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया की वेस्टइंडीज पर रनों के हिसाब से यह सबसे जीत है। उसने 1969 के अपने रिकॉर्ड को तोड़ दिया है। तब कंगारू टीम 382 रनों से जीती थी। पर्थ में पहला टेस्ट ऑस्ट्रेलिया 164 रन से जीता था। नियमित कप्तान पैट कमिंस की जगह स्टीव स्मिथ ने इस मैच में कप्तानी की। उन्होंने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया। ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में सात विकेट पर 511 रन बनाए। वहीं, वेस्टइंडीज की टीम पहली पारी उसकी टीम दूसरी पारी में 77 रनों पर सिमट गई। यह ऑस्ट्रेलिया की जमीन पर टेस्ट में उसका न्यूनतम स्कोर है। इससे पहले 1952 में उसने सिडनी में 78 रन बनाए थे। स्टार्क, नेसर और बोलैंड की तिकड़ी ने बरपाया कहर मिचेल स्टार्क, माइकल नेसर और स्कॉट बोलैंड ने दूसरी पारी में कहर बरपा दिया। इन तीनों ने वेस्टइंडीज की टीम को लगातार झटके दिए। स्टार्क, नेसर और बोलैंड को तीन-तीन सफलता मिली। वेस्टइंडीज के लिए पांच खिलाड़ी ही दहाई का आंकड़ा पार कर पाए। तेजनारायण चंद्रपॉल ने सबसे ज्यादा 17 रन बनाए। वेस्टइंडीज के तीन बल्लेबाज नहीं खोल सके खाता विकेटकीपर जोशुआ डा सिल्वा ने 15, रोस्टन चेज ने 13, डेवोन थॉमस ने 12 और जेसन होल्डर ने 11 रन की पारी खेली।

ये है भारतीय महिला क्रिकेट टीम की सिक्स हिटिंग मशीन

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। डीवाई पाटिल स्टेडियम में खेले गए दूसरे टी20 मैच में ऑस्ट्रेलिया पर भारत की रोमांचक जीत में, युवा विकेटकीपर-बल्लेबाज रिचा घोष का महत्वपूर्ण योगदान रहा। 188 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए जब भारतीय टीम ने 2 ओवर के भीतर हरमनप्रीत कौर और स्मृति 5 मैच की सीरीज में 1-1 की बराबरी भी कर ली। कप्तान हरमन ने की तारीफ भारत की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने रिचा की जमकर तारीफ की और कहा कि मैं हमेशा उनका समर्थन कर रही थीं, तब भी जब वह रन नहीं बना रही थीं। अपने शुरुआती दिनों में, वह थोड़ा संघर्ष कर रही थीं, लेकिन मैं हमेशा उनका

मंधाना का विकेट गंवा दिया। उस वक्त 21 गेंद पर 40 रन की दरकार थी। रिचा ने खेली 13 गेंद पर 26 रन की पारी बल्लेबाजी करने आई रिचा ने 13 गेंद पर 26 रन बनाकर टीम इंडिया को मैच में बराबरी दिला दी। उन्होंने 26 रन की अपनी पारी में 3 छक्के लगाए। इसके अलावा जब सुपर ओवर में टीम बल्लेबाजी करने उतरी तो उन्होंने दूसरी ही गेंद पर छक्का लगाकर टीम की स्थिति को मजबूत कर दिया।नतीजा भारत ने ऑस्ट्रेलिया के सामने 21 रन का लक्ष्य रखा, जिसे रेणुका सिंह ने डिफेंड करते हुए टीम इंडिया को जीत दिला दी। इस जीत के साथ ही टीम ने समर्थन कर रही थीं। इस मैच में उन्होंने अपनी पावर-हिटिंग का प्रदर्शन किया, जो हमने घरेलू मैचों में भी देखा है।पहले वनडे में भले ही टीम इंडिया को हार मिली थी, लेकिन उस मैच में भी रिचा ने 20 गेंद पर 36 रन की तेजतर्रार पारी खेली थी। उन्होंने 36 रन की पारी में दो छक्के भी लगाए थे। अब ब्रेबोर्न में होगा मुकाबला पांच मैचों की सीरीज के बाकी बचे तीन मैचों के लिए टीम ब्रेबोर्न स्टेडियम जाएंगी। तीसरा टी20 मैच 14 दिसंबर को खेला जाएगा। फिलहाल सीरीज 1-1 की बराबरी पर है, पहला मैच ऑस्ट्रेलिया ने 9 विकेट से जीता था।

बीसीसीआई को लेकर फिर तिलमिलाए पीसीबी अध्यक्ष रमीज राजा

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। कहा- भारत के बिना भी हमारी क्रिकेट चल रहीरमीज राजा ने इस बात को फिर से दोहराया कि अगर पाकिस्तान को 2023 में एशिया कप की मेजबानी साथ नहीं खेल रही है तो कोई बड़ी बात नहीं है। उनके बिना भी हमारी क्रिकेट चल रही है। उन्होंने इस बात को फिर से दोहराया कि अगर पाकिस्तान को 2023 में एशिया कप की मेजबानी के अवसर के लिए पाकिस्तान नहीं जाएगी। वह एशियन क्रिकेट काउंसिल (एसीसी) के प्रमुख भी हैं। जय शाह ने यह भी कहा था कि टूर्नामेंट को तटस्थ स्थान पर आयोजित किया जाएगा। इसके बाद पीसीबी ने अगले

के अवसर से वंचित किया जाता है, तो पाकिस्तान अगले साल भारत में होने वाले वनडे विश्व कप का बहिष्कार कर सकता है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के अध्यक्ष रमीज राजा ने बीसीसीआई पर नए सिरे से प्रहार किया है। उन्होंने कहा कि अगर भारतीय टीम हमारे से वंचित किया जाता है, तो पाकिस्तान अगले साल भारत में होने वाले वनडे विश्व कप का बहिष्कार कर सकता है। दोनों क्रिकेट बोर्डों के बीच तनाव अक्तूबर में शुरू हुआ था। बीसीसीआई सचिव जय शाह ने खुलासा था किया कि टीम इंडिया एशिया कप साल एशिया कप के बाद होने वाले वनडे विश्व कप से हटने की धमकी दी। रमीज राजा ने क्या कहा रमीज राजा ने शनिवार को स्काई स्पोर्ट्स क्रिकेट से कहा, ठहम वास्तव में इस बात को लेकर चर्चा नहीं करना चाहते हैं, लेकिन प्रशंसक चाहते हैं कि हम प्रतिक्रिया दें। भारत-पाकिस्तान के बारे में भारत की जो कहानी रही है, उससे प्रशंसकों को दुख हुआ है। इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर माइकल अथर्टन के साथ बातचीत में राजा ने बीसीसीआई के रुख को अनुचित बताया और कहा कि पीसीबी एशिया कप के लिए स्थान में बदलाव का विरोध करेगा। भारत के खिलाफ द्विपक्षीय सीरीज खेलना चाहता है पाकिस्तान पीसीबी चेयरमैन ने कहा, ठमुझे लगता है कि सरकार की एक नीति है और मुझे नहीं पता कि वे आएंगे या नहीं। एशिया कप प्रशंसकों के लिए बहुत मायने रखता है।ठ पाकिस्तान के इस पूर्व क्रिकेटर का यह मानना भी है कि भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय सीरीज को फिर से शुरू करना चाहिए। हम भारत में जाकर खेलना चाहते हैं और उन्हें भी पाकिस्तान आना चाहिए। रमीज राजा ने कहा, ''हम भारत के बिना कई सालों से खेल रहे हैं और आगे बढ़ रहे हैं। पाकिस्तान ने अर्थव्यवस्था के पैमाने को आंतरिक रूप से देखा है और किसी तरह बहुत अच्छी तरह से जीवित रहा है।

सम्पादकीय

आर्थिक वृद्धि में अवरोध बनी महंगाई, मौद्रिक सख्ती के कारण कुछ दबाव दिखना स्वाभाविक

बुधवार को भारतीय रिजर्व बैंक-आरबीआइ ने नीतिगत ब्याज दरों में 35 आधार अंकों की बढ़ोतरी की। केंद्रीय बैंक का यह कदम तो अपेक्षा के अनुरूप ही था। चूंकि इस साल मई से जारी रिजर्व बैंक की इस कवायद के केंद्र में महंगाई पर काबू पाना है तो मौद्रिक समीक्षा के अवसर पर आरबीआइ गवर्नर शक्तिकांत दास की यह टिप्पणी खासी महत्वपूर्ण हो जाती है कि 'महंगाई का सबसे खराब दौर बीत चुका है।हालांकि, इस वास्तविकता को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता कि महंगाई की दर अभी भी असहज स्तर पर बनी हुई है। यही कारण है कि आरबीआइ को यह भी कहना पड़ा कि मुद्रास्फीति के विरुद्ध अभी कार्रवाई पूरी नहीं हुई है और महंगाई की उभरती स्थिति पर वह 'अर्जुन की आंख' की तरह नजर रखेगा। उसकी यह रणनीति पूरी तरह व्यावहारिक भी है, क्योंकि महंगाई एक ऐसा मुद्दा है जो कई पहलुओं को प्रभावित कर रहा है और उसके लिए जिम्मेदार तमाम कारकों पर हमारा कोई नियंत्रण भी नहीं।केंद्रीय बैंक के लिए महंगाई अभी भी बड़ी समस्या बनी हुई है तो उसके पीछे कई कारण हैं। इस समस्या का स्वरूप त्रिआयामी है। पहला ईंधन, दूसरा खाद्य उत्पाद और तीसरा कोर इन्फ्लेशन यानी मूल मुद्रास्फीति। ये तीनों पहलू ही मिलकर महंगाई की दशा-दिशा का संकेत करते हैं। ईंधन की बात करें तों कच्चे तेल की कीमतों में कुछ कमी आई है, लेकिन कहा नहीं जा सकता कि यह कमी कितनी स्थायी है एवं उसमें और गिरावट आएगी या नहीं। पश्चिमी देशों ने रूसी कच्चे तेल पर जो मूल्य सीमा निर्धारित की है, उससे रूस द्वारा उत्पादन में कटौती के आसार से इन्कार नहीं किया जा सकता। कुल मिलाकर, रूस-यूक्रेन संघर्ष को लेकर जितनी अनिश्चितता बढ़ गई है उसी अनुपात में ऊर्जा स्रोतों की कीमतों में उथल-पुथल की आशंका बढ़ी है। खाद्य उत्पादों की ऊंची कीमतें अभी भी लोगों को परेशान कर रही हैं, लेकिन उनमें कुछ समय के बाद राहत मिलने की उम्मीद बंधी है। पिछले साल गेहूं की तैयार फसल के दौरान बढ़े तापमान ने उत्पादन को प्रभावित किया था। इस साल स्थिति बेहतर दिख रही है। रबी की फसल के लिए जहां जमीन में नमी अनुकूल स्थिति में है, वहीं जलाशयों की स्थिति भी कहीं बेहतर है। इस बार बोआई भी ज्यादा हुई है। यदि कोई विषम मौसमी परिघटना दस्तक नहीं देती तो इस साल अच्छे उत्पादन से सुधरी आपूर्ति कीमतों को घटा सकती है। महंगाई के मोर्चे पर सबसे बड़ी सिरदर्दी ईंधन और खाद्य उत्पादों को हटाकर आकलित की जाने वाली कोर इन्फ्लेशन की है। इसका छह प्रतिशत के दायरे में रहना रिजर्व बैंक की चिंता बढ़ा रहा है। इसकी बड़ी वजह सेवाओं की मांग में जबरदस्त इजाफा है। कोविड के कारण लंबे समय तक घरों में रहे लोगों की आवाजाही तेजी से बढ़ी है। इससे विमानन सेवाओं और होटलों से लेकर पर्यटन से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों की मांग में वृद्धि हुई है। बढ़े दामों के बावजूद लोग इन सेवाओं के उपभोग में पीछे नहीं हैं। यही रुझान कार जैसी उपभोक्ता वस्तुओं के मामले में दिखता है, जिनकी कीमतों में बढ़ोतरी और वाहन ऋण के लिए बढ़ती ब्याज दरों के बाद भी उनकी बिक्री में तेजी का रुख बना हुआ है। वहीं, कई प्रकार की आगम लागतें घटने के बावजूद कंपनियां लागत में कटौती का लाभ उपभोक्ताओं को देने से हिचक रही हैं। वे पूर्व में हुए नुकसान की भरपाई से अपना संतुलन साधने में लगी हैं। महंगाई के इसी दबाव को देखते हुए बैंक ने अपने पत्ते पूरी तरह नहीं खोले कि मौद्रिक सख्ती का यह सिलसिला इसी प्रकार जारी रहेगा या नहीं। मौद्रिक सख्ती के कारण आर्थिक वृद्धि पर दबाव दिखना स्वाभाविक है। इससे कर्ज की मांग पर असर पड़ेगा। आर्थिक गतिविधियां प्रभावित होंगी। उपभोग पर दबाव बढ़ेगा तो उत्पादन भी उसी अनुपात में प्रभावित होगा। यही कारण है कि आर्थिक वृद्धि को लेकर अनुमान घटाए जा रहे हैं। खुद भारतीय रिजर्व बैंक ने भी चालू वित्त वर्ष के लिए आर्थिक वृद्धि के सात प्रतिशत के अनुमान को घटाकर 6.8 प्रतिशत कर दिया। इतनी वृद्धि के बावजूद भारत विश्व में सबसे तेजी से वृद्धि करने वाली अर्थव्यवस्था बना रहेगा। हालांकि इससे बड़ी चुनौती का सामना अगले साल होगा। उसके लिए हमने भी आर्थिक वृद्धि के अनुमान को 6.5 प्रतिशत से घटाकर 6 प्रतिशत कर दिया है। कुछ दिन पहले जीडीपी की दूसरी तिमाही के आंकड़े भी आए हैं, जिनमें आई गिरावट अपेक्षा के अनुरूप ही है, क्योंकि पिछले साल की तेज वृद्धि का कारण कमजोर बेस इफेक्ट था।

विविध रंगों वाला विश्वविद्यालय, जेएनयू की एक ऐसी तस्वीर भी जिसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) एक बार फिर सुर्खियों में है। इस बार विश्वविद्यालय परिसर में जाति का जहर घोलने का काम किया गया। इसमें दोराय नहीं कि ऐसे कृत्य जेएनयू के दीर्घकालिक महत्व को कमजोर करते हैं, क्योंकि शिक्षक और विद्यार्थी की कोई जाति नहीं होती। कहा भी गया है कि 'जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।' 1969 में अपनी स्थापना के समय से ही जेएनयू हमेशा ही उत्कृष्टता, रचनात्मकता और बौद्धिकता की अनवरत खोज में रहा है। हालांकि वहां कई बार विचारधाराओं का टकराव होता रहा है, पर कभी लोगों ने शालीनता नहीं छोड़ी, लेकिन अब ये विरोध विद्रूप होते जा रहे हैं। जेएनयू की एक खास छवि रही है। विचारों की दुनिया में तो इसका विशेष स्थान है। दुख की बात यह है कि कुछ लोग इसकी इसी लोकप्रियता का दुरुपयोग अपने एजेंडे एवं नैरेटिव को आगे बढ़ाने के लिए करते रहे हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर को खेमों में बांटकर इसकी वर्षों की कमाई गई प्रतिष्ठा को धूमिल करने का काम किया है। अमेरिका की हार्वर्ड यूर्निवर्सिटी की तर्ज पर बनाए गए इस विश्वविद्यालय में प्राचीन नालंदा से लेकर मास्को एवं पेरिस विश्वविद्यालय सहित लंदन स्कूल आफ इकोनमिक्स तक के विचार समाए हैं। जेएनयू ने गरीब परिवारों से आने वाले छात्रों के लिए भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करना संभव बनाया है। सामान्य आरक्षण के अलावा जेएनयू एकमात्र ऐसा शिक्षा संस्थान है, जहां महिलाओं, गरीबों एवं पिछड़े क्षेत्र से आने वाले छात्रों को अतिरिक्त वरीयता दी जाती है। उच्च शिक्षा की आकांक्षा रखने वाले देश के तमाम युवाओं का यहां पढ़ने का सपना होता है। इसी कारण इस विश्वविद्यालय की महत्ता बनी हुई है। विश्व की लगभग सभी भाषाएं यहां पढ़ाई जाती हैं। जेएनयू में सामाजिक विज्ञान, आधुनिक विज्ञान के साथ ही बदलते समय में स्कूल आफ मैनेजमेंट और स्कूल आफ इंजीनियरिंग भी आरंभ हुआ है। यहां यूपीएससी के आकांक्षी हैं तो दूसरी तरफ शोध उन्मुख विद्वान भी। मंत्री, अकदामिक विद्वान, चर्चित नौकरशाह देने का श्रेय भी जेएनयू को है। लगभग आठ हजार से ज्यादा छात्रों और करीब 450 शिक्षकों वाला यह संस्थान भारत की सभी रैंकिंग में शीर्ष पर रहता है। इसका नाम दुनिया भर के अच्छे विश्वविद्यालयों में भी शामिल है। यहां की समालोचनात्मक मानसिकता उच्च बुद्धि की सूचक है। जेएनयू शिक्षा जगत और बाहरी दुनिया के बीच संबंधों पर खुलकर संवाद करता है। वास्तव में जेएनयू सवाल करना, बहस करना एवं असहमति को स्वीकार करने की क्षमता विकसित करता है। इसीलिए विश्वविद्यालय जीवंत चर्चाओं के लिए जाना जाता है। देश के सबसे बड़े राष्ट्रीय पुस्तकालयों में से एक जेएनयू लाइब्रेरी सहित पार्थसारथी राक्स (कैंपस के जंगल में छोटा-सा टीला) और गंगा ढाबा आज भी बौद्धिक चर्चाओं के केंद्र हैं। यह भी माना जाता है कि विभिन्न विषयों की तह तक जाने की जैसी चाह जेएनयू में है, वैसी अन्यत्र कहीं नहीं। कुछ 'टुकड़े-टुकड़े गैंग' के चलते कोई भी इस विराट विश्वविद्यालय को गलत रूप में चित्रित नहीं कर सकता, क्योंकि इन चंद लोगों के अलावा जेएनयू के ज्यादातर विद्यार्थी अपने काम से देश को गौरवान्वित करते रहे हैं। राष्ट्र निर्माण में इस विश्वविद्यालय और इसके छात्रों की अहम भूमिका है। प्रत्येक वर्ष जेएनयू के कई छात्र-छात्राएं प्रशासनिक, पुलिस और विदेश सेवाओं में जाते हैं। अभी हाल के वर्षों में भारतीय आर्थिक सेवा में शीर्ष रैंकिंग के साथ ही लगभग 70 प्रतिशत चयनित उम्मीदवार जेएनयू के ही थे। आज इसके पूर्व छात्र-छात्राएं नीति संस्थानों और मीडिया के उच्च पदों पर आसीन हैं। साथ ही कई विश्वविद्यालयों के कुलपति, महत्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थानों के अध्यक्ष एवं अनुसंधान संस्थानों के निदेशक जेएनयू से जुड़े हैं। कई देशों के राष्ट्राध्यक्ष भी जेएनयू से ही पढ़े हैं। फिल्मी दुनिया तक के कई चर्चित नाम जेएनयू के पूर्व छात्र-छात्राएं रहे हैं। स्थापना के पांच दशकों के बाद आज भी जेएनयू दुनिया के तमाम विकसित देशों की सूची में इतनी काबिलियत तो रखता ही है कि उसे कोई नजरअंदाज न कर पाए। पिछले दिनों जेएनयू की चर्चा उसकी दीवारों पर लिखे गए कुछ अपशब्दों के चलते हो रही थी, पर शायद ही कभी यह बताया गया हो कि इसी विश्वविद्यालय में सेना को समर्पित एक 'वाल आफ हीरोज' भी स्थापित है, जहां 21 परमवीर चक्र पुरस्कार विजेताओं के चित्र प्रदर्शित किए गए हैं। विरोध-प्रदर्शनों के अलावा भी इस विश्वविद्यालय की एक बड़ी तस्वीर है, जिसमें देशभक्ति है और कुछ कर गुजरने का जज्बा और नेतृत्व करने का साहस है। जेएनयू में भारतीय संस्कृति के सभी रंग झलकते हैं। वहां छोटे-बड़े सभी राज्यों के छात्र-छात्राएं अध्ययन करते हैं। परिसर में इमारतों, छात्रावासों, सड़कों और सुविधाओं के नाम भारतीय विरासत और संस्कृति से लिए गए हैं। यह भारत की सबसे अच्छी सांस्कृतिक और भौगोलिक तस्वीर का प्रतिनिधित्व करता है। लगभग तय है कि राजनीतिक और वैचारिक आधार पर आरोप-प्रत्यारोप का दौर तो चलता ही रहेगा, लेकिन इसके साथ ही हमें ऐसी गतिविधियों को भी रोकना होगा, जो राष्ट्र-विरोधी हैं या राष्ट्र की संप्रभुता के खिलाफ हैं। आज यह आवश्यक है कि किसी भी वैचारिक सोच से ज्यादा हम सभी राष्ट्रीय हित में बात करें। भारतीयता जेएनयू की विरासत है और इसे मजबूत करना हमारा कर्तव्य है।

नियमों-कानूनों को तोड़ने और कूड़ा फैलाने वालों को भी चाहिए स्मार्ट सिटी

मेरे शहर का नाम स्मार्ट सिटी बनने की सूची में क्या आया, हर कोई मानो बौरा-सा गया। शहर के लोगों की हालत वैसी थी जैसे

किसी गरीब के बेटे को सरकारी नौकरी मिल गई हो। उन्हें लगा कि अब सारे दुख-दर्द दूर हो जाएंगे। हर कोई सपना देखने में मगन था। हर चौक-चौराहे पर एक ही चर्चा थी कि हमारा शहर अब स्मार्ट होगा। एक जगह लोग अखबार पढ़ते-पढ़ते बातें कर रहे थे। एक ने बोला, 'देखते जाइए अब हमारा शहर कैसी तरक्की करेगा। साफ-सफाई, बिजली, सड़कें सब ठीक हो जाएंगी।' दूसरे ने बोला, 'हां मैंने भी सुना है कि स्मार्ट शहर में बिजली-पानी 24 घंटे रहती है।' तीसरे ने कहा, 'मैंने तो सुना है कि अपने शहर में मेट्रो भी आ जाएगी।' एक अन्य ने कहा, 'देखते जाओ, अब तो शहर के साथ हम सबके भाग्य भी बदलेंगे।' सबके चेहरे की खुशी देखने लायक थी। कुछ लोग बोल रहे थे और बाकी मुंह फाड़े सुन रहे थे। चर्चा में दखल देते हुए मोहन बोला, 'सबसे पहले तो सड़कें चिकनी होनी चाहिए। गड्ढों की वजह से मोटर साइकिल बहुत संभाल के चलानी पड़ती है।

जी-20 अध्यक्षता का कांटों भरा ताज, भारत अपनी विदेश नीति में बहुपक्षीय भावनाओं को दे वरीयता

इस महीने के आरंभ में भारत ने विधिवत जी-20 की अध्यक्षता संभाल ली है। भारत के लिए यह गर्व की अनुभूति कराने वाला है कि उसे एक महत्वपूर्ण वैश्विक संगठन की अध्यक्षता मिली है। यूं तो जी-20 की अध्यक्षता बारी-बारी से सदस्य देशों को मिलती है, लेकिन जिस दौर में भारत को यह कमान मिली है, उसकी बड़ी अहमियत है। पूरी दुनिया कोविड महामारी से उबरी भी नहीं थी कि रूस और यूक्रेन के बीच छिड़े युद्ध ने तमाम समीकरण बिगाड़ दिए। इससे बिगड़ी आपूर्ति श्रृंखला ने कई देशों को दिवालिया बनाने के कगार पर पहुंचा दिया। विकसित देशों में भी महंगाई ने रिकार्ड तोड़ दिया। पूरी दुनिया में आर्थिक सुस्ती का माहौल बन गया। एक ओर पश्चिमी देशों और रूस के बीच संघर्ष विराम के कोई आसार नहीं दिख रहे तो दूसरी ओर चीन और अमेरिका के बीच तनाव घटने का नाम नहीं ले रहा। ऐसी तनातनी का सबसे बड़ा खामियाजा गरीब और विकासशील देशों को भुगतना पड़ रहा है। संप्रति समग्र वैश्विक परिदृश्य चुनौतियों से दो-चार है। चूंकि जी-20 विश्व की शीर्ष अर्थव्यवस्थाओं का संगठन है तो इसका दारोमदार उस पर ही है कि वह इन मौजूदा संकटों का समाधान निकालने की दिशा में सक्रिय हो, मगर इससे जुड़े कुछ अंशभागियों के बीच टकराव से यह आसान नहीं लगता। इसलिए समझा जा सकता है कि जी-20 अध्यक्ष का ताज भारत के लिए कितना कांटों भरा साबित होने वाला है। अपनी अध्यक्षता को सफल बनाने के लिए भारत को कड़ी मशक्कत करनी होगी। हालिया रुझान यही दर्शाता है कि भारत ने इस दिशा में सक्रिय होकर संतुलन साधने की कवायद शुरू कर दी है। इसका पहला संकेत तो तब देखने को मिला जब ऐसी खबरें आईं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस साल रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ शिखर वार्ता के लिए रूस नहीं जाएंगे। दोनों देशों के बीच दिसंबर में वार्षिक शिखर वार्ता होती है, जिसमें राष्ट्राध्यक्ष बारी-बारी से एक दूसरे के देश जाते हैं। इस बार मोदी के रूस जाने की बारी थी, जिसके आसार अब नहीं दिखते। विदेश मंत्रालय ने इसके पीछे कोई आधिकारिक वजह तो नहीं बताई है, लेकिन कूटनीतिक हलकों में व्यापक रूप से यही माना जा रहा है कि रूस को लेकर वैश्विक आक्रोश के चलते भारत यह कदम उठाने जा रहा है। खासतौर से रूस ने जिस प्रकार बार-बार परमाणु हेकड़ी दिखाई है, उससे उसके प्रति धारणा खराब हुई है। ऐसी स्थिति में भारत नहीं चाहता कि रूसी राष्ट्रपति के साथ उसकी गलबहियों से वैश्विक स्तर पर किसी तरह का नकारात्मक संदेश जाए। हाल में इंडोनेशिया में हुए जी-20 सम्मेलन में भी रूस के प्रति वैश्विक भावनाएं मुखरता से अभिव्यक्त हुई थीं। इसलिए भारत नहीं चाहेगा कि उसकी अध्यक्षता के दौरान व्यापक संबंधों पर द्विपक्षीय पहलू से कोई ग्रहण लगे। इसके लिए भारतीय विदेश नीति की सराहना भी करनी होगी कि वह रूस को नाराज किए बिना ही अपने हितों को साधने में सफल हो रही है। यह वह दौर है जब तमाम जिम्मेदार वैश्विक संगठन अपनी जिम्मेदारियों से मुकरते दिख रहे हैं। उनका पराभव हो रहा है। नेतृत्व निर्वात की स्थिति है। विशेष रूप से ग्लोबल साउथ यानी विकासशील देशों की सुनवाई के लिए कोई तैयार नहीं। यह भारत के लिए स्वाभाविक नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित होने का सुनहरा अवसर है। भारत इस मौके को भुनाने के लिए तत्पर भी दिखता है। इसके संकेत जी-20 की अध्यक्षता संभालने के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों से भी मिले, जिसमें उन्होंने कहा कि 'हमारी जी-20 प्राथमिकताओं को न केवल हमारे जी-20 भागीदारों, बल्कि ग्लोबल साउथ वाले हिस्से में हमारे साथ चलने वाले देशों, जिनकी बातें अक्सर अनसुनी कर दी जाती हैं, के परामर्श से निर्धारित किया जाएगा।' वास्तव में, इस समय शक्तिशाली देशों के बीच चल रहे संघर्ष से जो खाद्य और ईंधन संकट उत्पन्न हुआ है, उसकी सबसे ज्यादा मार इन्हीं देशों पर पड़ रही है। यही कारण है कि भारत ने इन समस्याओं से निपटने के लिए माहौल बनाना शुरू कर दिया है। भारत बार-बार तनाव घटाने को लेकर सचेत कर रहा है। इसके पीछे यही मंशा है कि वैश्विक स्तर पर शांति एवं स्थायित्व कायम हो। मौजूदा अस्थिरता दूर हो सके। पर्यावरण संरक्षण के लिए भी प्रधानमंत्री भारतीय संस्कृति में समाहित सूत्रों को साझा कर रहे हैं। भारत की ओर से विकसित देशों को आईना दिखाते हुए व्यापक वैश्विक सुधारों के लिए दबाव भी बनाया जा रहा है। इन सुधारों से सबसे अधिक लाभान्वित विकासशील देश ही होंगे। स्पष्ट है कि इस चुनौतीपूर्ण परिवेश में भारत अपने प्रयासों से स्वयं को वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित करने की दिशा में सक्रिय होकर यही संदेश देना चाहता है कि वह अंतरराष्ट्रीय शांति एवं स्थायित्व को सुनिश्चित करने में सेतु की भूमिका निभाने के लिए तैयार है। यह जी-20 की अध्यक्षता को सफलता दिलाने के लिए आवश्यक भी है। पूरा विश्व इस समय भारत को बड़ी उम्मीद से देख भी रहा है। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों से लेकर जर्मन विदेश मंत्री एनालेना बेयरबाक तक तमाम नेता कह चुके हैं कि भारत जी-20 की अध्यक्षता को एक नया आयाम देगा। ऐसे में भारत के लिए आवश्यक हो चला है कि इस समय वह अपनी विदेश नीति में द्विपक्षीय भाव से अधिक बहुपक्षीय भावनाओं को वरीयता दे। तभी वह विभिन्न अंशभागियों के बीच किसी सहमति का निर्माण कर अपनी अध्यक्षता को सफलता दिला सकेगा। बदलते वैश्विक ढांचे में इससे भारत का कद और बढ़ेगा। मूल रूप से आर्थिक हितों से जुड़ा संगठन होने के नाते जी-20 में भरपूर संभावनाएं हैं कि उसके माध्यम से भू-राजनीतिक तनाव और टकरावों को दूर किया जा सके। यह इसलिए आवश्यक हो गया है, क्योंकि फिलहाल संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाएं अपने इस मूल दायित्व की पूर्ति में विफल दिख रही हैं। यही उम्मीद है कि भारत विश्व के समक्ष कायम मुश्किलों को एक अवसर के रूप में ढालकर अपने नेतृत्व से वैश्विक छाप छोड़ने में सफल होगा, जैसा कि उसने कोविड महामारी में भी किया था।

एम्स साइबर हमले से मिला सबक, डिजिटल इंडिया की तर्ज पर बनानी होगी विशेष रणनीति

पिछले दिनों दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के सर्वर पर बड़ा साइबर हमला हुआ। हमला इतना गंभीर था कि उसका सर्वर लगातार नौ दिन तक डाउन रहा। इस दौरान एम्स का कामकाज बड़े पैमाने पर ठप रहा। अधिकांश काम को मैनुअल तरीके से निपटाए गए। इस बीच यह भी खबर आई कि हैकिंग करने वालों ने लाखों मरीजों के चुराए हुए डाटा को वापस करने और सर्वर को बहाल करने के लिए क्रिप्टोकरेंसी के माध्यम से 200 करोड़ रुपये की फिरौती भी मांगी। फिलहाल इस हमले की जांच चल रही है, लेकिन इससे यह साफ हो गया है कि देश का कोई भी संस्थान साइबर हमलों से सुरक्षित नहीं है। दरअसल एम्स के बाद इंडियन काउंसिल आफ मेडिकल रिसर्च (आइसीएमआर) की वेबसाइट पर भी बड़ा साइबर हमला हुआ। हैकर्स ने एक दिन में ही करीब छह हजार बार हमले के प्रयास किए। दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल के सर्वर पर भी नवंबर के मध्य में एक बड़ा साइबर हमला हुआ था। वह हमला हांगकांग से किया गया था। हालांकि आइसीएमआर के सर्वर की सुरक्षा में कोई खामी नहीं थी, जिससे हैकर्स जानकारी चुराने में विफल रहे। फिलहाल आइसीएमआर की वेबसाइट सुरक्षित है। इस तरह के साइबर हमलों की जांच-पड़ताल करने वाली दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल की शाखा इंटेलीजेंस फ्यूजन स्ट्रैटेजिक आपरेशन के अनुसार हांगकांग की दो ई-मेल आइडी से एम्स के सर्वर पर हमला किया गया। दोनों ई-मेल का आइपी एड्रेस पता कर लिया गया है। आरंभिक जांच के अनुसार इसमें चीन की भूमिका भी सामने आ रही है। इसके पहले भी देश में कई बड़े साइबर हमलों में चीन की भूमिका सामने आई है। जाहिर है भारत सहित दुनियाभर में इस तरह के

साइबर हमलों का खतरा मंडरा रहा है। पिछले तीन साल में चीन से भारत पर कई साइबर हमले किए हैं। पिछले वर्ष एक बड़े साइबर हमले में एयर इंडिया के 45 लाख यात्रियों का डाटा लीक हुआ था। याद कीजिए जब अक्तूबर 2020 में पावर ग्रिड पर साइबर हमले के चलते मुंबई में किस तरह ब्लैकआउट हो गया था और हाल में नेशनल स्टाक एक्सचेंज यानी एनएसई का कामकाज भी कई घंटे प्रभावित रहा। विशेषज्ञों के अनुसार चीन के हैकर्स के पास भारत के खिलाफ साइबर हमला करने की बड़ी क्षमता है। जब भी उन्हें मौका मिलता है वे देश की व्यवस्था में बड़ी गड़बड़ी पैदा कर देते हैं। साइबर जगत के विशेषज्ञों के अनुसार यह डाटा-युद्ध का जमाना है। हम जब डाटा को टुकड़ों में देखते हैं तो नहीं समझ पाते हैं कि आखिर इसे चुराकर कोई क्या हासिल कर सकता है? लेकिन इन्हीं छोटी-छोटी जानकारियों को एकसाथ जुटाकर और उनका किसी खास मकसद से हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। यानी कि देश के आंतरिक मुद्दों, राष्ट्रीय नीति, सुरक्षा, राजनीति, अर्थव्यवस्था सबमें सेंधमारी के प्रयास किए जा सकते हैं। एक तरफ जहां देश के संवेदनशील संस्थानों पर साइबर हमले के मामले बढ़ रहे हैं, तो दूसरी तरफ महत्वपूर्ण संस्थान साइबर हमलों से बचने के लिए पर्याप्त कदम तक नहीं उठा रहे हैं। एम्स के मामले में भी बड़ी लापरवाही सामने आई है। मसलन संस्थान में सर्वर के रखरखाव के लिए पिछले करीब साढ़े चार साल से कोई एजेंसी नियुक्त नहीं थी। सर्वर की सुरक्षा के लिए दक्ष कर्मचारियों का भी अभाव था। सर्वर और हार्डवेयर के रखरखाव की जिम्मेदारी पहले एक निजी एजेंसी के पास थी, जिसके अनुबंध का नवीनीकरण 2018 से नहीं हुआ था। उसके बाद से किसी एजेंसी के पास सर्वर के रखरखाव की अधिकृत जिम्मेदारी नहीं थी। इस वजह से सर्वर का ठीक से रखरखाव सुनिश्चित नहीं हो रहा था। साफ है एम्स के सर्वर की सुरक्षा भगवान भरोसे ही थी। ऐसे में साइबर हमले की घटना के बाद एम्स की व्यवस्था पर बड़ा सवाल खड़ा हो गया है। यह स्थिति तब है जब चिकित्सा व्यवस्था को पूरी तरह डिजिटल करने और डाक्टरों द्वारा मरीजों को लिखी जाने वाली दवा की पर्ची भी आनलाइन जारी करने की दिशा में कदम उठाए जा रहे हैं। एम्स जैसी ही स्थिति देश के अधिकांश संस्थानों की है, जिन्होंने साइबर हमलों से निपटने के लिए कोई पुख्ता इंतजाम नहीं किया है। देखा जाए तो भारत में कोरोना काल से ही साइबर हमलों का खतरा बढ़ गया है। कोरोना काल तो हैकर्स के लिए बहुत अनुकूल रहा। साल 2020-2021 में भारतीय संस्थानों और यूजर्स पर सबसे ज्यादा साइबर हमले किए गए। साइबर सुरक्षा कंपनी सोनिकवाल की रिपोर्ट के अनुसार भारत में इस दौरान लाखों की संख्या में साइबर हमले हुए। महामारी के दौरान सबसे ज्यादा साइबर हमले वर्क फ्राम होम करने वाले यूजर्स पर किए गए।

संक्षिप्त समाचार

हमारे सहयोगियों के खिलाफ बढ़ रही चीन की आक्रामकता

(आधुनिक समाचार सेवा)
अरुणाचल प्रदेश । हम सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध' अरुणाचल प्रदेश में तवांग सेक्टर के पास भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच ताजा संघर्ष के बाद स्थिति को नियंत्रित करने के भारत के प्रयासों का अमेरिका ने समर्थन किया है। अरुणाचल प्रदेश में तवांग सेक्टर के पास भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच ताजा संघर्ष के बाद स्थिति को नियंत्रित करने के

भारत के प्रयासों का अमेरिका ने समर्थन किया है। पेंटागन के प्रेस सचिव पैट राइडर ने एक बयान जारी करते हुए कहा है कि हम अपने सहयोगियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की अपनी प्रतिबद्धता पर कायम रहेंगे। भारत ने जिस तरह से स्थिति को नियंत्रित किया हम उसके प्रयासों का पूरा समर्थन करते हैं। पैट राइडर ने आगे कहा है कि अमेरिका, भारत-चीन सीमा पर चल रही गतिविधियों पर नजर बनाए हुए है। उन्होंने कहा कि यह दुनिया जानती है कि चीन किस तरह से तानाशाही कर सीमा पर अपने बलों को इकट्ठा कर तथाकथित सैन्य बुनियादी ढांचे का निर्माण कर रहा है। पैट राइडर ने आगे कहा कि चीन खुद को मुखर करने की कोशिश में अमेरिकी सहयोगियों और भागीदारों के खिलाफ भी आक्रामक हो रहा है। उन्होंने कहा कि एलएसी के बाद अब चीन समुद्री सीमा में भी भारत के अलावा अन्य देशों के लिए भी बड़ी चुनौती बन रहा है। हिंद महासागर क्षेत्र में चीनी सेना की मौजूदगी चिंता का विषय है।

श्रीमती साधना त्रिपाठी अखिल भारतबर्षीय ब्राह्मण महासभा मे हुई शामिल

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। छपरोला खेड़ा में श्रीमती साधना त्रिपाठी को अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा में शामिल किया गया। इनको सम्मिलित करने के लिए प्रदेश अध्यक्ष पंडित पीतांबर शर्मा प्रदेश महामंत्री मास्टर परमानंद शर्मा जिला गौतम बुद्ध नगर महामंत्री मास्टर राम कुमार शर्मा नगर महामंत्री मास्टर तनवीर शर्मा दीपक शर्मा ने इनके निवास स्थान पर आकर साधना त्रिपाठी को सदस्यता दिलाई। और विश्वास जताते हुए कहा कि इनके शामिल होने से संगठन को मजबूती मिलेगी और संगठन का विस्तार भी होगा। उन्हें अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा की सदस्यता दिलाई । इस मौके पर श्रीमती साधना त्रिपाठी ने एक बडा एलान करते हुए कहा कि इस एरिया मे जल्द से जल्द एक बड़ी मीटिंग बुलाएंगे। जिसमे सभी को अपने अपने अलग-अलग संगठन के दायित्व की घोषणा की जाएगी। अंत में श्रीमती साधना त्रिपाठी ने संगठन के सभी पदाधिकारियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संगठन ने जो मुझ पर इतना भरोसा करते हुए संगठन की जिम्मेदारी दी है उसे मै पूरी इमानदारी के साथ निभाऊगी।

नोएडा हाट मे अब एक्सपोर्ट का सामान भी मिलेगा

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। हैंडलूम हैंडीक्राफ्ट एक्सपोर्टर वेलफेयर एसोसिएशन ऑल इंडिया की सबसे बड़ी एक्सपोर्टर्स की एसोसिएशन है जिसमें हमारे साथ लगभग 5 हज़ार एक्सपोर्टर इंडस्ट्री उत्तर प्रदेश एवं ऑल इंडिया की जुड़ी हुई है। हैंडलूम हैंडीक्राफ्ट एक्सपोर्टर वेलफेयर एसोसिएशन हमेशा अपनी एक्सपोर्ट इंडस्ट्री के

लिए एक्सपोर्ट को बढ़ावा देने के लिए भारत की जी डी पी में सहयोग करने के लिए हमेशा कार्यरत है।इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए है अब हैंडलूम हैंडीक्राफ्ट एक्सपोर्टर वेलफेयर एसोसिएशन नोएडा स्थित नोएडा हार्ट में निर्यातक है। इंडस्ट्री के लिए रिटेल फेयर शुरू करने जा रहा है जिसके अंतर्गत हमने 27 दुकानें लंबे समय के लिए लेने जा रहे हैं। हम चाहते हैं कि जो प्रोडक्ट हमारे एक्सपोर्टर एक्सपोर्ट करते हैं वहीं प्रोडक्ट हमारे नोएडा के निवासियों को भी मिलना चाहिए इसके लिए सभी एक्सपोर्टर से बात कर ली गई है और कुछ स्टॉल हम शुरू करवा चुके हैं आपको अवगत कराना है कि हमारे सभी एक्सपोर्ट क्वालिटी के प्रोडक्ट कम से कम रेट पर आम जनता के लिए उपलब्ध होंगे इससे हमारे निर्यातक को भी लाभ होगा एवं कुछ रोज़गार भी लोगों को उपलब्ध करा सकेंगे एवं नोएडा हार्ट की सुंदरता बढ़ाने में भी हम लोग सहयोग करेंगे। आप सभी मीडियाकर्मियों से अनुरोध है कि ये हमारे इस मिशन को जिसका जिसका ब्रॉड नेम हमें ईयू मार्केट रखा है। इसको प्रचार प्रसार करने में हमारी मदद करें अब आम जनता को यह जानकारी दी है कि यहाँ नोएडा हाथ में अब अच्छी क्वालिटी के एक्सपोर्ट क्वालिटी के प्रोडक्ट मिलने शुरू हो गई है।

शहर की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस कमिश्नर से मिला सपा प्रतिनिधिमंडल की सुरक्षा व्यवस्था पर चर्चा

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। समाजवादी पार्टी के महानगर अध्यक्ष दीपक विग के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी का एक प्रतिनिधिमंडल सोमवार को पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह से मिला। समाजवादी पार्टी के महानगर

उपाध्यक्ष विपिन अग्रवाल ने बताया कि यह एक शिष्टाचार भेंट थी। जिसमें उनकी टीम ने पुलिस कमिश्नर को गुलदस्ता भेंट किया और नोएडा महानगर में सुरक्षा के मुद्दे पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि शहर में चेन स्केचिंग, साइबर क्राइम, महिला उत्पीड़न के मामले आम हो चुके हैं। इसकी रोकथाम के लिए पुलिस प्रशासन को सख्त कदम उठाने चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने पुलिस गश्त बढ़ाने की भी मांग की ताकि अपराधियों के बढ़ते हौसलों को रोका जा सके। इस प्रतिनिधिमंडल में सपा निवर्तमान उपाध्यक्ष विपिन अग्रवाल, शकील सैफी, बाबूलाल बंसल, सुनीता शारदा, अतुल यादव दिनेश यादव, आदि लोग शामिल थे।

कलश यात्रा के साथ शुरू हुई भव्य श्री राम कथा

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। दिल्ली के अली पुर थाना के प्राचीन शिव मंदिर परिसर में आज 701 के कलश के साथ कलश यात्रा निकाली गई। यह कलश यात्रा अली पुर के आसपास के सभी मोहल्लो से होते हुए कथा पंडाल मे पहुँच कर कलश स्थापन किया गया। कथाव्यास अनंत श्री विभूषित महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 स्वामी पंचमानंद जी महाराज (श्री पंचायती महानिर्वाणी अखाडा) द्वारा 1 बजे से संगीत मय भव्य श्री राम कथा का श्री गणेश हुआ। कथाव्यास ने पहले दिन की कथा मे नारद मोह , शिव पार्वती विवाह की कथा सुनाई। कथा पंडाल मे रामादल की अनुपम झांकी का दर्शन भक्तों ने किया। पूरा कथा पंडाल राममय हो गया था। सभी भक्तों ने बडे मनोयोग से कथा का श्रवण किया। तत्पश्चात आरती एवं प्रसाद वितरण किया।

विहिप एवं बजरंग दल द्वारा 38वां शौर्य यात्रा निकाली गई

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल द्वारा 38वाँ शौर्य यात्रा नोएडा स्टेडियम राम लीला मैदान सेक्टर 21, नोएडा से प्रारम्भ होकर सेक्टर 12,22 तिराहा से जवाहर लाल नेहरू युवा केन्द्र से होते हुए मेट्रो

हॉस्पिटल से बांस बल्ली मार्केट से बैंक ऑफ़ इंडिया सेक्टर 9 होते हुए पुनः नोएडा स्टेडियम में समापन हुआ। उक्त कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में माननीय डॉ. सुरेन्द्र जैन अन्तर्राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता विश्व हिन्दू परिषद, कार्यक्रम अध्यक्ष सुनील जैन , महानगर अध्यक्ष लाल मणि पांडेय , कार्याध्यक्ष छाया सिंह, संगठन मंत्री राहुल , मंत्री विवेक केके मिश्रा, विभाग संयोजक ललित , उमानन्दन , उपाध्यक्ष सतवीर, कोषाध्यक्ष अनिल , सहमंत्री जितेन्द्र, संयोजक गंगा, प्रवीण, चंदन, आकाश, प्रेम, सुधीर, अनुराधा, भगवती, नवनीत, नितिन, राहुल दूबे, अजीत, पवन एवं आदि पदाधिकारी बन्धु एवं कार्यकर्ता बन्धु उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल ने जी एस टी कमिश्नर को सौंपा ज्ञापन

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल एवं गौतम बुध नगर के सभी व्यापारिक संगठनों द्वारा जीएसटी विभाग में एडीशनल कमिश्नर आदरणीय आदित्य सिंह जी आईएएस से मुलाकात कर सुनील गुप्ता एनसीआर अध्यक्ष उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल एवं व्यवसायिक प्रकोष्ठ बीजेपी जिला संयोजक के नेतृत्व में ज्ञापन सौंपा गया जिसमें जिले गौतम बुध नगर में जीएसटी विभाग द्वारा किए जा रहे सर्वे एवं छापो से उद्यामियों एवं व्यापारियों में जो व्यापक भय एवं अनिश्चितता का माहौल बना हुआ था जिस कारणवश बहुत सारी मंडियां व्यापारिक एवं औद्योगिक प्रतिष्ठान अपने कार्यों को सुचारू रूप से चलाने में असमर्थ थे उसको अविलंब बंद करने की प्रार्थना की गई, इस अंदर का संज्ञान लेते हुए महोदय एडिशनल कमिश्नर ने तुरंत इस तरीके की कार्यवाही पर रोक लगाने का व्यापारियों को आश्वासन दिया। जिसमे सुनील गुप्ता ने कहा की व्यापार मंडल कभी भी अपंजीकृत व्यापारियों को प्रोत्साहन नहीं देता है। लेकिन छोटे स्तर के व्यापारी जो जीएसटी के पंजीकरण प्रक्रिया में नहीं आते हैं उन पर की जा रही इस कार्यवाही का विरोध करता है व्यापार मंडल प्रदेश सरकार एवं विभाग की राजस्व बढ़ाओ नीति के साथ है लेकिन यह कार्य उद्यमियों एवं व्यापारियों का सहयोग लेकर की जानी चाहिए ना की सर्वे एवं छापों के नाम पर उनको भयभीत अथवा उत्पीड़ित करके की जानी चाहिए साथ ही यह भी विश्वास दिलाया की नए पंजीकरण अभियान को चलाने में गौतम बुध नगर का उद्यमी एवं व्यापारी गण विभाग का पूर्ण रूप से सहयोग करेगा। इस बैठक में सांसद प्रतिनिधि संजय बाली

सेक्टर 9 एसोसिएशन अध्यक्ष सत्य नारायण गोयल, व्यापार मंडल अध्यक्ष संजय जैन, महासचिव सुधीर पोरवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमित अग्रवाल, उपाध्यक्ष शैलेंद्र वर्णवाल, विक्रम सेठी, फूल सिंह यादव, सचिव गोविंद अग्रवाल, संगठन महामंत्री मनोज गुप्ता, सचिव राहुल भाटिया, युवा अध्यक्ष अमित पोरवाल, तनवीर चौधरी, मनोज गुप्ता एडवोकेट सचिव राघव बंसल , श्रीमती रेनू बाला शर्मा, श्रीमती सीमा रावत, श्रीमती संतोष सिह, एचके सरदाना, विकास गोयल, शैलेंद्र अग्रवाल, जग भूषण गर्ग दादरी से सचिन गोयल बिलासपुर से गोपाल के बजाज दी दनकौर से महेंद्र कुमार शर्मा दनकौर से समेत सैकड़ों व्यापारियों ने इस प्रक्रिया का विरोध करते हुए अपना ज्ञापन सौंपा।

गलगोटिया यूनिवर्सिटी के प्रोद डॉद राजीव मिश्रा को 'बेस्ट डीन ऑफ हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म' से सम्मानित किया गया

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। गलगोटिया यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ़ हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म के डीन प्रोद (डॉ.) राजीव मिश्रा, को ठग्लोबल हॉस्पिटैलिटी एंड

टूरिज्म लीडरशिप अवार्ड प्रदत्त 2022 बेस्ट डीन ऑफ हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्मठ से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा आयोजित 7वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ठएडवांस्ड टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेशन इन टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री (अतिथि) के दौरान उनके आतिथ्य और पर्यटन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण एवं समर्पित योगदान के लिए दिया गया। प्रो0 राजीव मिश्रा ने इस प्रतिष्ठित पुरस्कार को प्राप्त ।

गोवर्धन पूजा एवं बाल लीलाओं का किया वर्णन

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। सेक्टर 93 स्थित श्रमिक कुंज प्रथम में चल रही श्रीमद्भागवत कथा के पांचवें दिन कथा व्यास विनोद कृष्ण जी महाराज ने भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं का भावपूर्ण वर्णन किया। कथा प्रसंग को बढ़ाते हुए व्यास जी ने कहा कि देवताओं

के राजा इन्द्र को बहुत अभिमान हो जाता है भगवान उसका अहंकार नष्ट करने की सोचते हैं। वृज में हर वर्ष इन्द्र की धूमधाम से पूजा होती है लेकिन इस बार कृष्ण इंद्र की पूजा के लिए मना करते हैं और गोवर्धन पूजा के लिए सभी को मना लेते हैं।इस बात से इन्द्र क्रोधित होकर बृज मंडल में भारी वर्षा करते हैं।सारे वृजवासी भयभीत हो जाते हैं। तब भगवान कृष्ण अपनी उंगली पर गोवर्धन पर्वत को धारण कर सभी की रक्षा करते हैं। वृजवासी भगवान को छप्पन भोग अर्पित करते हैं। इन्द्र जान जाते हैं कि कृष्ण और कोई नहीं साक्षात नारायण हैं। इन्द्र भगवान कृष्ण से क्षमा माँगते हैं। सभी भक्तों द्वारा बनाए गए अलग अलग पकवानों का भोग भगवान गोवर्धन जी को लगाया गया।इसके बाद वकासुर अघासुर के वध के प्रसंगों का भी वर्णन कथा व्यास द्वारा किया गया। इस अवसर पर आयोजन समिति के प्रवक्ता राघवेंद्र दुबे ने बताया कि 13 दिसंबर को रुक्मिणी विवाह आदि कथाओं का वर्णन व्यास जी द्वारा किया जायेगा। इस अवसर पर आयोजन समिति के प्रवक्ता राघवेंद्र दुबे, मुख्य यजमान श्यामानंद मिश्रा, पंडित महादेव शर्मा सहित तमाम भगवत्प्रेमी भक्तजन मौजूद रहे।

उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल जी एस टी कमिश्नर के साथ करेंगे बैठक

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। उद्यमियों एवं उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के सभी पदाधिकारी एवं समस्त सदस्यों सहित जिला गौतम बुध नगर में जीएसटी विभाग द्वारा सर्वे एवं छापों के संदर्भ में जिले के समस्त व्यापारी एवं उद्यमी भाई 12 दिसम्बर को प्रातः 10:45 बजे जीएसटी कार्यालय सेक्टर 148 नोएडा में सुनील गुप्ता एनसीआर अध्यक्ष उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल एवं जिला संयोजक बीजेपी व्यवसायिक प्रकोष्ठ के नेतृत्व में इकट्ठा होकर जीएसटी कमिश्नर एवं उच्च अधिकारियों के समक्ष इस विषय पर उद्यमियों एवं व्यापारियों के हो रहे उत्पीड़न को अधिकारियों के समक्ष रखेंगे, साथ ही जीएसटी अधिकारियों एवं विभाग द्वारा की जा रही इस कार्रवाई के पीछे की मंशा को भी जानने का प्रयास किया जायेगा। आप सभी व्यापारियों एवं उद्यमियों से निवेदन है कि कल प्रातः 10:45 पर अपनी परेशानियों के समाधान हेतु जीएसटी कार्यालय अवश्य पहुंचने का कष्ट करें। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल आपको हो रही समस्याओं का उचित समाधान कराने का पूर्ण प्रयास करेगा। कृपया समय का विशेष ध्यान रखें। इस मौके पर सुमित मोदी अध्यक्ष संजय जैन कार्यकारी अध्यक्ष सुधीर पोरवाल महा सचिव नरेश बंसल वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमित अग्रवाल वरिष्ठ उपाध्यक्ष सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे ।

जेसीआई रॉयल्स झाँसी द्वारा निशुल्क दंत एवं चर्म रोग परीक्षण शिविर का आयोजन

(आधुनिक समाचार सेवा)
झाँसी। जेसीआई रॉयल झांसी द्वारा सिपरी बाजार स्थित परिवार प्लाजा में निशुल्क दंत एवं चर्म रोग परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया

यह शिविर आर्य कन्या इंटर कॉलेज के पास बजाज डेंटल क्लीनिक में संपन्न हुआ कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जेसीआई प्रेसिडेंट नवीन माहेश्वरी एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में विशाल त्रिपाठी उपस्थित रहे। इस निशुल्क परीक्षण शिविर में क्षेत्रीय व दूरदराज से आए लोग भी सम्मिलित हुए लगभग सैकड़ा भर से अधिक आगंतुकों ने अपना परीक्षण करवाया परीक्षण उपरांत दवा भी वितरित की गई। यह शिविर सुबह 10 बजे से प्रारम्भ होकर दोपहर 1 बजे समाप्त हुआ। इस शिविर में फेस एवं हेयर एक्सपर्ट डॉक्टर मधुरिमा नायक एवं दंत रोग विशेषज्ञ गौरव बजाज ने मरीजों का परीक्षण किया साथ ही उन्हें त्वचा, बाल और दांतों को स्वस्थ व सुरक्षित रखने हेतु सलाह दी गयी। डॉ0 मधुरिमा नायक ने बताया झाँसी व आस पास के क्षेत्रों में धूल मिट्टी ज्यादा मात्रा में पाई जाती है जिससे त्वचा एवं बालों से संबंधित कई समस्याएं उत्पन्न होती है हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए जब भी पैदल या दोपहिया वाहन से यात्रा करें तो अपने चेहरे को अच्छे से ढककर रखें, डॉ0 बजाज ने कहा बुन्देलखण्ड में गुटखा का प्रचलन अधिक है जिससे दाँतो को नुकसान होता है एवं कई रोग उत्पन्न होते हैं हमें नियमित रूप से दो बार अच्छे से दाँत साफ करना चाहिये। शिविर के समापन पर डॉ0 मधुरिमा नायक ने सभी का आभार व्यक्त किया।

केसरवानी जाति को पिछड़ा वर्ग में शामिल नहीं किया तो आन्दोलन

(आधुनिक समाचार सेवा)
शहडोल/ब्यौहारा। ब्यौहारी में केसरवानी वैश्य प्रदेश सभा की

तृतीय प्रदेश संयुक्त कार्यसमिति की बैठक 10 दिसंबर को आयोजित हुई। जिसमें केसरवानी को पिछड़ा वर्ग में शामिल करने का मामला उठाया गया। सभा के पदाधिकारियों ने कहा कि बार-बार शासन से मांग किये जाने एवं विभिन्न तत्कालीन आयोगों की अनुशंसा (काका कालेलकर एवं मण्डल आयोग) के बाद भी आज तक न्याय नहीं करते हुए शासन द्वारा केसरवानी जाति को पिछड़ा वर्ग की सूची में शामिल नहीं किया गया है। जबकि पूर्व विन्ध्य प्रदेश में केसरवानी बहुतायात में निवासरत हैं। सीधी सिंगरौली, शहडोल, अनूपपुर, सतना, रीवा से भी निम्न स्तर का जीवन व्यतीत कर रहे है। प्रदेश सभा द्वारा निर्णय लिया गया है कि माह अप्रैल में केसरवानी समाज द्वारा भोपाल व रीवा में उग्र आन्दोलन किया जावेगा। बैठक में केसरवानी वैश्य प्रदेश सभा के अध्यक्ष अनिल कुमार गुप्ता, राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव गुप्ता, राष्ट्रीय महामंत्री (वेलफेयर ट्रस्ट) आरके गुप्ता, राजकमल गुप्ता संरक्षक (सागर), जेपी गुप्ता (वरिष्ठ उपाध्यक्ष), भोला प्रसाद गुप्ता, नव-निर्वाचित जनप्रतिनिधियों का सम्मान समारोह 'जयप्रकाश गुप्ता, ममता गुप्ता पूर्व महापौर रीवा, टीडी गुप्ता, विनीता गणेश केसरवानी प्रदेश महिला अध्यक्ष, विशेषचन्द केसरवानी प्रदेश तरुण सभा अध्यक्ष, स्वामीदीन गुप्त, कृष्ण गुप्ता राजन अध्यक्ष नगर परिषद ब्यौहारी, पूजा आशुतोष गुप्ता जिला पंचायत सदस्य सतना, मनोज केसरवानी अध्यक्ष नगर सभा ब्यौहारी, रीतू संजय गुप्ता अध्यक्ष महिला सभा ब्यौहारी एवं जीतेन्द्र गुप्ता चमड़िया अध्यक्ष तरुण सभा ब्यौहारी उपस्थित रहे।

गेहूं की फसल में विभिन्न खरपतवारों का प्रभावा नियंत्रण के लिए जारी की गई एडवाइजरी

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। जिला कृषि रक्षा अधिकारी गौतम बुद्ध नगर ने जनपद के समस्त कृषकों का आह्वान करते हुए जानकारी दी है कि रबी में गेहूँ की फसल जनपद की प्रमुख फसल है।

अगर समय से गेहूं की फसल में खरपतवार नियन्त्रण नहीं किया जाता है, तो फसल के उत्पादन में 20-30 प्रतिशत की कमी आ जाती है। इसलिए माह दिसम्बर में गेहूँ की फसल की प्रतिदिन निगरानी करते हुए खरपतवार नियन्त्रण अति आवश्यक है।उन्होंने गेहूँ की फसल में विभिन्न खरपतवारों के संबंध में बताया कि सकरी पत्ती में- गेहूंसा, जंगली जई एवं चौड़ी पत्ती में-बथुआ, सेन्जी, कृष्णनील, हिरनखूरी, चटरी-मटरी अकरा-अकरी, जंगली, प्याजी, खरतुआ, सत्यनाशी आदि प्रमुख खरपतवार है।उन्होंने सकरी पत्ती के खरपतवारों के नियन्त्रण के उपाय के संबंध में बताया कि गेहूँसा एवं जंगली जई के नियन्त्रण के लिए क्रमशः(क)- आइसोप्रोटूरान 75 प्रति डब्लू पी0 की 1.25 किग्रा0 प्रति हे0। (ख)- सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 प्रति डब्लू जी0 की 33 ग्राम0 प्रति हे0। (ग)- फिनोक्साप्राप-पी इथाइल 10 प्रति डब्लू पी0 की 1.0 लीटर प्रति हे0। (घ)- क्लोडीनाफॉप प्रौपेरजिल 15 प्रति डब्लू पी0 की 40 ग्राम प्रति हे0 खरपतवारनाशी में से किसी एक रसायन की संस्तुत मात्रा को लगभग 500-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति है0 बुवाई के 20-25 दिन के बाद फलैटफैन नाजिल से छिड़काव करना चाहिए। सल्फोसल्फ्यूरॉन के लिए पानी की मात्रा 300 लीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए उन्होंने चौड़ी पत्ती के बथुआ, सेन्जी, कृष्णनील, हिरनखूरी, चटरी-मटरी, अकरा-अकरी, जंगली, प्याजी, खरतुआ, सत्यनाशी खरपतवारों के नियन्त्रण के लिए बताया कि क्रमशः (क)- 2-4 डी सोडियम साल्ट 80 प्रति0 डब्लू पी0 टेक्निकल की 625 ग्राम प्रति हे0। (ख)- 2-4 डी मिथाइल एमाइन सॉल्ट 58 प्रति एस0एल0 की 1.25 ली0 प्रति हे0। (ग)- काफेन्ट्राजान मिथाइल 20 प्रति0 डी0 एफ0 की 50 ग्राम प्रति हे0। (घ)- मेटसल्फ्यूरॉन मिथाइल 20 प्रति0 डब्लू पी0 की 20 ग्राम प्रति हे0 खरपतवारनाशी में से किसी एक रसायन की संस्तुत मात्रा को लगभग 500-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति है0 बुवाई के 20-25 दिन के बाद फलैटफैन नाजिल से छिड़काव करना चाहिए। उन्होंने सकरी एवं चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के एक साथ नियन्त्रण के उपाय के संबंध में बताया कि क्रमशः (क)- पेण्डीमेथालीन 30 प्रति0 ई0सी0 3.30 प्रति हे0 बुवाई के 3 दिन अन्दर। (ख)- मेट्रीब्यूजिन 70 प्रति0 डब्लू पी0 की 250 ग्राम प्रति हे0 बुवाई के 20-25 दिन बाद। (ग)- सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 प्रति0 + मेटसल्फ्यूरॉन मिथाइल 5 प्रति0 डब्लू जी0 40 ग्राम (2.5 यूनिट) बुवाई के 20-25 दिन बाद खरपतवारनाशी में से किसी एक रसायन की संस्तुत मात्रा को लगभग 300 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 फलैटफैन नाजिल से छिड़काव करना चाहिए। मैट्रीब्यूजिन के लिए पानी की मात्रा 500-600 ली0 प्रति हे0 होनी चाहिए।

प्रकाश राज ने उड़ाया अक्षय कुमार का मजाक तो भड़क गए फैंस, बोले 'तुम रियल लाइफ में भी विलेन हो'

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। सुपरस्टार अक्षय कुमार जल्द ही निर्माता महेश मांजरेकर की अपकमिंग पीरियड ड्रामा फिल्म में छत्रपति शिवाजी महाराज का किरदार निभाते नजर आने वाले हैं। फिल्म से उनका फर्स्ट लुक हाल ही में शेयर किया गया है। सोशल मीडिया पर अक्षय कुमार के लुक से ज्यादा चर्चे किसी और चीज के हैं। उन्हें ट्रोल करने वालों में अब साउथ एक्टर और राजनेता प्रकाश राज का भी नाम शामिल है। छत्रपति शिवाजी महाराज के रूप में अक्षय कुमार के शुरुआती शॉट में झूमर का फ्रेम देखा जा सकता है। इसमें फिल्म डायरेक्टर से एक भूल हो गई। दरअसल, पहली बार देखने में लोगों ऐसा लग रहा जैसे की झूमर के पूरे रिम पर प्रकाश बल्ब लगे हैं।बल्ब का आविष्कार छत्रपति शिवाजी महाराज के शासनकाल (1630-1680) के काफी बाद यानी 1879 में हुआ था। इसे लेकर अक्षय कुमार को सोशल मीडिया पर बुरी तरह ट्रोल किया जा रहा है। साउथ फिल्मों के सुपर विलेन प्रकाश राज ने भी इसपर सवाल उठाया है और अक्षय कुमार पर जमकर निशाना साधा है। ट्विटर पर प्रकाश ने टीजर का एक स्क्रीनशॉट शेयर किया है। जिसके साथ उन्होंने अक्षय कुमार और पीएम मोदी को लेकर एक मीम भी शेयर किया है। अक्षय कुमार को ट्रोल करने के चक्कर में प्रकाश राज भी यूजर्स के निशाने पर आ गए। एक यूजर ने उन्हें लिखा कि आप लोग बॉलीवुड को गिराने में क्यों लगे हुए हो, ठीक है कि साउथ की फिल्में अच्छा कर रही हैं। पर इसका मतलब ये है कि बॉलीवुड की फिल्मों में आपको सिर्फ कमियां ही दिखाई देंगी। तो किसी ने कहा कि आप असल जिंदगी में भी विलेन ही हैं। अक्षय कुमार के अलावा फिल्म में जय दुधाने, उत्कर्ष शिंदे, विशाल निकम, विराट मडके, हार्दिक जोशी, सत्या, अक्षय, नवाब खान और प्रवीण तारडे नजर आने वाले हैं। महेश मांजरेकर द्वारा निर्देशित फिल्म साल 2023 में दिवाली पर मराठी, हिंदी, तमिल और तेलुगु में सिनेमाघरों में रिलीज होगी। अपने सोशल मीडिया पर, अक्षय ने एक तस्वीर साझा की, जिसमें वह शिवाजी महाराज की एक तस्वीर के सामने आशीर्वाद मांग रहे हैं। उन्होंने फोटो शेयर करते हुए लिखा, 'आज मराठी फिल्म वेडात मराठे वीर दौडले सात की शूटिंग शुरू कर रहा हूं जिस में छत्रपति शिवाजी महाराज जी की भूमिका कर पाना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

कोई शादी के 10 तो कोई 18 साल बाद बना पेरेंट्स, इन टीवी सितारों के घर आईं खुशियां

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। हर साल की तरह यह साल भी अपने आखिरी महीने में है। साल खत्म होने वाला है और यह पूरे साल की यादों को याद करने का समय है। दिसंबर को शुरू हुए पूरे 10 दिन बीत गए हैं। ये साल टीवी हस्तियों के निजी जीवन में खुशियों का अपना हिस्सा रहा। साल की शुरुआत से कई पसंदीदा हस्तियों ने परिवार के नए सदस्यों के आगमन का स्वागत किया। तो चलिए आपको बताते हैं 2022 में कौन-कौन से टीवी स्टार्स पेरेंट्स बने। टीवी इंडस्ट्री की जानी-मानी एक्ट्रेस कृतिका सेंगर इस साल के शुरुआत में मां बनीं थी। उन्होंने 12 मई को बेटी को जन्म दिया था। कृतिका ने साल 2014 में एक्टर निकितिन धीर संग शादी रचाई थी। शादी के आठ साल बाद ये कपल बेटी देविका के पेरेंट्स बनकर काफी खुश है। कॉमेडियन भारती सिंह इस साल अप्रैल में मां बन गई थी। उन्होंने बेटे को जन्म दिया था। साल 2017 में भारती ने हर्ष लिंबाचिया संग फेरे लिए थे। शादी के करीब 5 साल बाद ये कपल माता-पिता बना। टीवी के राम-सीता यानी एक्ट्रेस गुरमीत चौधरी और देबिना बनर्जी के लिए ये साल डबल खुशियां लेकर आया। ये कपल इस साल दो बार पेरेंट्स बने। पहली बार 3 अप्रैल में बड़ी बेटी लियाना के पेरेंट्स बनें। वहीं लियाना के जन्म के 7 महीने बाद गुरमीत और देबिना दूसरी बार माता-पिता बनें। दूसरी बार उनके उनके घर बेटी ने जन्म लिया।

जब उड़ते प्लेन में जहरीले सांपों ने किया हमला, रोंगटे खड़े कर देगा फिल्म का हर सीन

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। फिल्मों की कहानी हमारी असल जिंदगी से जुड़ी होती हैं। पर कभी-कभी काल्पनिक कहानियां भी हमारे आस-पास ऐसे घटती हैं कि बस देखने सुनने वालों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। शनिवार को ऐसा ही कुछ हुआ जिसके बाद लोगों को सुपरहिट हॉलीवुड फिल्म की याद आ गई। हुआ ये कि एयर इंडिया एक्सप्रेस के विमान में सांप मिलने से हड़कंप मच गया। बीच उड़ान जब सांपों से भर गया प्लेन दरअसल, सांप एयर इंडिया एक्सप्रेस विमान के कार्गो होल्ड में मिला। कार्गो होल्ड में सांप के होने की जानकारी विमान के दुबई एयरपोर्ट पर लैंड करने के बाद मिली। सूचना मिलते ही डीजीसीए ने इसकी जांच के आदेश दे दिए। पर लोगों को तुरंत ही हॉलीवुड की फिल्म 'स्नेक्स ऑन ए प्लेन' की याद आ गई। साल 2006 की फिल्म एक्शन थ्रिलर फिल्म में एक सांपों से भरा हुआ प्लेन दिखाया गया है।स्नेक्स ऑन ए प्लेन' की स्टोरी उस समय काफी काल्पनिक लगी जब दिखाया गया कि कैसे बादलों के बीच एक प्लेन सांपों से भर जाता है। कहानी ऐसी है कि एक गवाह शॉन जोन्स को एफबीआई एजेंट नेविल फ्लिन और जॉन सैंडर्स बोइंग 747-400 पर ले जा रहे हैं। ये मर्डर केस में ये गवाह और इसे अपने बॉस किम लॉस के खिलाफ गवाही देनी है। किम लॉस ने प्लेन को खत्म करने के लिए जहरीले सांपों से भरा एक बॉक्स कार्गो में रखवा दिया है।किम के एक गुर्गे ने सांपों को और अधिक भड़काने के लिए यात्रियों पर ऐसा स्प्रे करवाया जिससे की उन्हें और गुस्सा आए और वो हमला कर दें। इस तरह कार्गो में बॉक्स खुल जाता है और खतरनाक वाइपर्स प्लेन पर हमला कर देते हैं। सबसे पहले फ्लाइट की लाइट चली जाती है जिसके बाद शुरू होता है मौत का खेल। फिल्म में कई जगह कुछ देर के लिए आपकी धड़कने रुक जाएंगी, जब देखेंगे कि सांप कैसे लोगों के अपना निशाना बना रहे हैं।'स्नेक्स ऑन ए प्लेन' को आप ओटीटी पर घर बैठ देख सकते हैं, ये नेटफ्लिक्स पर उपलब्ध है। रॉटन टोमेटो पर फिल्म को 69 प्रतिशत लोगों ने अच्छा बताया है। तो आप भी इस वीकेंड अगर कोई थ्रिलर फिल्म देखना चाहते हैं तो जल्दी ही इस फिल्म को ओटीटी पर बिंज वॉच कर सकते हैं।

अलाया एफ ने शुरू की श्रीकांत बोला की बायोपिक फिल्म श्री की शूटिंग

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली।बॉलीवुड एक्ट्रेस अलाया एफ इन दिनों अपनी रोमांटिक थ्रिलर फ्रेडी की सफलता का जश्न मना रही हैं। अब उन्होंने अपनी अगली फिल्म श्री का एलान कर दिया है, जो श्रीकांत बोला की बायोपिक होगी। अलाया एफ ने अपनी इस फिल्म का एलान अपने इंस्टाग्राम पर एक तस्वीर साझा कर किया है, जिसमें वो अपने हाथों में अपने अपकमिंग प्रोजेक्ट श्री का क्लैपबोर्ड लिए हुए पोज दे रही हैं साथ ही जानकारी देते हुए बताया कि उन्होंने इस फिल्म की शूटिंग शुरू कर दी है। इस तस्वीर को इंस्टाग्राम पर शेयर कर लिखा, श्रीकांत बोला की बायोपिक से सेट पर वापसी कर रही हूं। इस शानदार यात्रा की शुरू कर ने के लिए उत्साहित हूं। जानकारी के अनुसार इस बायोपिक फिल्म में एक्ट्रेस अलाया एफ के साथ अभिनेता राजकुमार राव नेत्रहीन उद्योगपति श्रीकांत बोला के किरदार में नजर आने वाले हैं। आपको बता दें कि श्रीकांत बोला एक नेत्रहीन उद्योगपति हैं, जिन्होंने अपने दम पर सफलता हासिल की है। श्रीकांत को अपने जन्म से लेकर 10वीं क्लास के बाद साइंस स्ट्रीम चुनने के लिए कानूनी लड़ाई लड़ने तक, अपने जीवन के शुरुआती दिनों में भारी विरोध और संघर्ष का सामना करना पड़ा था। उन्होंने 12वीं में साइंस स्ट्रीम से 98 प्रतिशत अंक हासिल कर सभी को चौंका दिया था और फिर एमआईटी से यूएसए में अध्ययन करने वाले पहले अंतरराष्ट्रीय नेत्रहीन छात्र बने। सांड की आंख का निर्देशन करने वाले तुषार हीरानंदानी के निर्देशन में बन रही इस फिल्म का निर्माण भूषण कुमार की टी-सीरीज और चॉक एन चीज फिल्म्स प्रोडक्शन एलएलपी द्वारा किया जा रहा है। इस बायोपिक में राजकुमार राव और अलाया एफ के अलावा शरद केलकर, साउथ की सुपरस्टार एक्ट्रेस ज्योतिका भी अहम भूमिका में नजर आने वाली हैं। इस फिल्म की कहानी श्रीकांत बोला के जीवन और बौलेंट इंडस्ट्रीज की स्थापना पर आधारित होगी। वहीं, बात अगर अलाया एफ के वर्कफ्रंट की करें तो वो जल्द ही यू टर्न और ऑलमोस्ट प्यार विद डीजे मोहब्बत में भी नजर आएंगी, जिसका हाल ही में मारीकेच इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में वर्ल्ड प्रीमियर किया गया है।

आन की स्क्रीनिंग में सायरा बानो, वहीदा रहमान सहित कई दिग्गज कलाकार आए नजर

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। हिंदी फिल्म जगत के बुलंद सितारों में एक दिलीप कुमार ने हिंदी सिनेमा को कई शानदार फिल्में दी हैं, जिसके चलते वो आज भी लोगों को दिल में जिंदा हैं। अब दिग्गज कलाकार की 100वीं बर्थ एनिवर्सरी के मौके पर फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन ने देश भर के शहरों में उनकी कई यादगार फिल्मों को दिखाया जा रहा है। वहीं, मुंबई में दिलीप आन की स्क्रीनिंग के दौरान कई दिग्गज कलाकारों में सिनेमाघरों में शिरकत की है और सभी खुशी जाहिर करते हुए दिवंगत अभिनेता की जमकर प्रशंसा की। मुंबई के एक पीवीआर सिनेमाघर में आन की स्क्रीनिंग के दौरान दिलीप कुमार की पत्नी सायरा बानो के साथ वहीदा रहमान और आशा पारेख जैसी दिग्गज कलाकारों ने भाग लिया। फिल्म की स्क्रीनिंग से पहले सायरा बानो ने कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया। आपको बता दें कि दिलीप कुमार और वहीदा रहमान ने फिल्म राम और श्याम, आदमी और दिल दिया दर्द लिया जैसी फिल्मों में काम कर चुकी हैं। उनकी ये फिल्म समारोह में स्क्रीनिंग की लिस्ट में शामिल थी। इस कार्यक्रम में आशा पारेख, वहीदा रहमान, सायरा बानो के अलावा दिव्या दत्ता, पूनम सिन्हा ने भी भाग लिया था। जानकारी के अनुसार, 10 और 11 दिसंबर को देशभर के 27 शहरों के पीवीआर सिनेमाघरों में उनकी यादगार फिल्मों को दिखाया जाएगा। ऐसे सेलिब्रेट होगी दिलीप साहब की 100वीं बर्थ एनिवर्सरी अमिताभ बच्चन ने बुधवार को इस जानकारी को साझा करते हुए अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर एक पोस्टर में शेयर किया हैं, जिसमें दिलीप कुमार अपने चिरपरिचित अंदाज में दिख रहे हैं। आपको बता दें कि बॉलीवुड के ट्रेजिडी किंग दिलीप कुमार का लंबी बीमारी के चलते पिछले साल 7 जुलाई, 2021 को 98 साल की उम्र में निधन हो गया था। उन्होंने हिंदुजा अस्पताल में आखिरी सांस ली। दिलीप साहब ने 50 साल ज्यादा लंबे अपने फिल्मी करियर के दौरान कई उतार-चढ़ाव देखे। उन्होंने साल 1944 में आई फिल्म अमिय चक्रवर्ती की फिल्म ज्वार भाटा से अपने करियर की शुरुआत की थी। लेकिन उन्होंने पहचान साल 1947 में आई फिल्म जुगनू से मिली। इसके बाद उन्होंने शहीद, मेला, बाबुल, देवदास, नाय दौर, मुगल ए आजम, गंगा जमुना, राम और श्याम, कर्मा जैसी सुपरहिट फिल्मों में काम किया। हिंदी सिनेमा के दिग्गज दिलीप कुमार को फिल्मों में अपने योगदान के लिए भारत द्वारा पद्म विभूषण, दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड, पद्म भूषण से नवाजा गया था।

डिशवॉशिंग जेल का एड किया तो ट्रोल हुए मिलिंद सोमन

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। सुपरमॉडल और एक्टर मिलिंद सोमन आज फिटनेस का नया नाम है। 57 साल की उम्र में भी मैराथन में भाग लेने से लेकर अपने वर्कआउट तक मिलिंद सोमन हर तस्वीर और वीडियो से सुर्खियां बटोरते हैं। हाल ही में वो अपने एक एड को लेकर सोशल मीडिया यूजर्स के निशाने पर हैं। मिलिंद सोमन ने अपने लेटेस्ट इंस्टाग्राम पोस्ट से फैंस के साथ-साथ दूसरे इंटरनेट यूजर्स को भी चौंका दिया है, जिसमें वह माचो डिशवॉशिंग लिक्विड का एड करते हुए दिखाई दे रहे हैं। इसमें वो जिम में एक लड़के के जरिए लोगों को बर्तन आसानी से धोने के बारे में बता रहे हैं। मिलिंद सोमन का यह विज्ञापन उनको लोगों के निशाने पर ले आया है और नेटिजन्स उन्हें जमकर ट्रोल भी कर रहे हैं। वीडियो एक जिम में शुरू होता है जहां एक युवक अपनी मां को बर्तन धोने में मदद करने के बारे में शेखी बघारता हुआ दिखाई देता है। 'मैं थोड़ा थक गया हूं क्योंकि मैंने कल रात सभी बर्तन धोए थे। मैं अक्सर अपनी मां की मदद करता हूं, हमें करना चाहिए।' इसके बाद मिलिंद सोमन फ्रेम में एंटर करते हुए कहते हैं, 'वाह, क्या डींग मारी है। जाओ, मजा आया अब, विम ब्लैक (जो डिशवॉशिंग लिक्विड की एक बोतल दिखाता है) यहां है। अब सब बर्तन धो लो और शेखी बघारते रहो।' वीडियो के अंत में एक्टर बॉटल के साथ पोज देते हुए नजर आ रहे हैं और कहते हैं, 'विम ब्लैक, साफ करने में आसान, डींग मारने के लिए अधिक।' मिलिंद सोमन ने इंस्टाग्राम पर वीडियो को कैप्शन के साथ शेयर किया, जिसमें लिखा था, ठविम ब्लैक - पुरुषों के लिए डिशवॉशिंग लिक्विड। या यह है सोशल मीडिया पर इस वीडियो को देख नेटिजन्स भड़क गए हैं। उनका मानना है कि यह विज्ञापन जेंडर स्टीरियोटाइप है और इसमें केवल पुरुषों को टारगेट किया जा रहा है। लोगों ने इस एड पर अपनी नाराजगी जतानी शुरू भी कर दी। एक यूजर ने कमेंट कर लिखा, 'भाई, नहाना नहीं है बर्तन धोने है इसमें जेंडर कहां से आ गया।

अमिताभ बच्चन से लेकर शाह रुख समेत ये सितारे होंगे शामिल

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। कोलकाता अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल की शुरुआत 15 दिसंबर से शुरू हो जा रही है, जो 22 दिसंबर तक चलेगा। इस 28वें कोलकाता अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में बॉलीवुड के शहंशाह अमिताभ बच्चन अपनी पत्नी जया बच्चन के साथ शामिल होंगे। बिग बी के अलावा शाहरुख खान भी इसमे शामिल होंगे। खबरों के मुताबिक इस फिल्म फेस्टिवल में शाहरुख खान और अमिताभ बच्चन को गेस्ट ऑफ ऑनर के सम्मान से नवाजा जाएगा। बिग बी और शाहरुख खान के अलावा इस फिल्म फेस्टिवल में बॉलीवुड के कई सितारे शामिल होंगे। इस लिस्ट में एक्ट्रेस रानी मुखर्जी, डायरेक्टर महेश भट्ट, ,सिंगर कुमार शानू और शत्रुघन सिन्हा जैसे सेलेब्स का नाम शामिल है। हाल में शाहरुख खान सऊदी अरब में आयोजित 'रेड सी फिल्म फेस्टिवल 2022' शामिल हुए थे। यहां 3अथ्व् की स्पेशल स्क्रीनिंग हुई थी और बॉलीवुड सुपरस्टार को स्पेशल सम्मान भी दिया गया था। इन दिनों एक्टर अपनी आने वाली फिल्म 'पठान को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म में शाहरुख के साथ दीपिका पादुकोण नजर आएंगी। हाल में शाहरुख खान सऊदी अरब में आयोजित 'रेड सी फिल्म फेस्टिवल 2022' शामिल हुए थे। यहां 3अथ्व् की स्पेशल स्क्रीनिंग हुई थी और बॉलीवुड सुपरस्टार को स्पेशल सम्मान भी दिया गया था। इन दिनों एक्टर अपनी आने वाली फिल्म 'पठान को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म में शाहरुख के साथ दीपिका पादुकोण नजर आएंगी। 15 दिसंबर से कोलकाता इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के 28वें संस्करण की शुरुआत होगी और 22 दिसंबर तक जारी रहेगा। आईएफएफ के दौरान देश और विदेश की तमाम फिल्मों और डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग की जाएगी।

शालीन भनोट दे रहे हैं टीना दत्ता को प्यार के नाम पर धोखा

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। बिग बॉस सीजन 16 में इन दिनों काफी हाई ऑक्टेन ड्रामा चल रहा है। शो से टीना दत्ता की विदाई हो गई है और उनके जाने के बाद से ही ब्रेस्टफ्रेंड काफी मायूस हैं। वैसे टीना की एलिमिनेशन के लिए शालीन ही जिम्मेदार है उन्होंने ही टीना के बजाए 25 लाख रुपये चुने और उतरन फेम एक्ट्रेस को घर से बेघर कर दिया। शालीन के प्यार की सच्चाई अब दुनिया के सामने आ गई है। झूठा है शालीन का प्यार शालीन जो टीना के लिए अपनी अपनी फिलिंग का दावा करते रहे हैं, उनकी पोल खुलती नजर आ रही है। अब इस पर कॉमेडियन एक्टर कृष्णा अभिषेक ने अपना रिएक्शन दिया है। बता दें कि कृष्णा बिग बॉस के से जुड़े रियलिटी शो के एक सेगमेंट के होस्ट भी हैं। उन्होंने कहा कि, 'इसका मतलब है कि शालीन टीना के प्यार में नहीं है, वरना वह उसे बचा लेता।'बिग बॉस 16 धीरे-धीरे अपने फिनाले की तरफ बढ़ रहा है। टीआरपी में भी इसकी रेटिंग अच्छी खासी है। शो में अब्दु राजिक, अर्चना गौतम, टीना, साजिद, शिव, प्रियंका काफी रंग जमा रहे हैं। लोगों को हर वीकेंड का वार पर सलमान खान का घर वालों को खरी खोटी सुनाना रास आ रहा है। कहा जा रहा है कि सीजन 13 के बाद अब सीजन 16 ही है जो घर-घर में देखा जा रहा है। ऐसे में मेकर्स कोई मौका नहीं छोड़ रहे हैं दर्शकों के दिलों की धड़कन बढ़ाने का। सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल हो रहे है कि टीना दत्ता ने शो में फिर से वापसी की है। उन्होंने शालीन की सबके सामने पोल खोली है कि कैसे वो शो से उनके जाने के बाद नो गार्डन एरिया में डांस कर रहे थे। शालीन हैरान रह जाते हैं और उन्हें समझ नहीं रहा कि हो क्या रहा है। इस पर तो सारे घरवाले मिलकर शालीन के मजे लेने लगते हैं। बिग बॉस में एलिमिनेशन के नाम पर अभी तक सिर्फ 4 लोग ही घर से बाहर गए हैं जिसमें श्रीजिता डे की वापसी हो वाइल्ड कार्ड के तौर पर हो चुकी है। आखिरी जाने वालों में गौतम विग थे, जिसके बाद लगातार एविक्शन टाले जा रहे हैं।

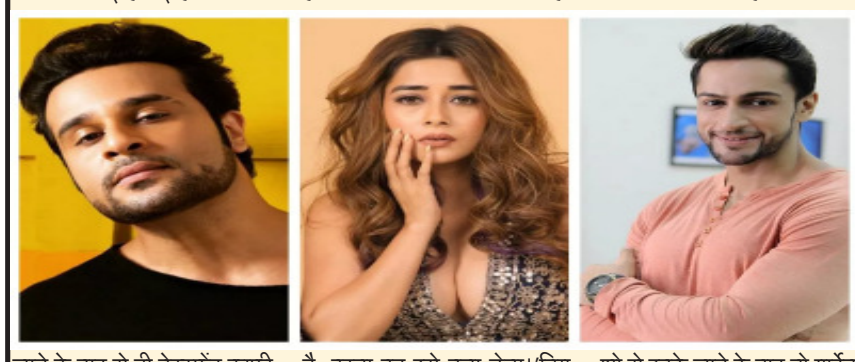

अफेयर की खबरों के बीच बंटी सजदेह की बहन सीमा के साथ नजर आई रिया चक्रवर्ती

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्ट्रेस रिया चक्रवर्ती एक बार अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में है। सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद रिया धीरे धीरे अपना लाइफ के ट्रक पर वापस लौटी हैं। इन दिनों वह अपने नए रिलेशनशिप को लेकर सुर्खियां बटोरी रही हैं। खबरें हैं कि रिया इन दिनों बंटी सजदेह को डेट कर रही हैं। हालांकि अभी तक इन खबरों पर एक्ट्रेस का कोई रिएक्शन सामने नहीं आया है, लेकिन कुछ तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है जिससे साफ जाहिर हो रहा है कि रिया बंटी संग रिलेशनशिप में हैं। देर रात जाने माने फिल्म निर्माता अमृतपाल सिंह बिंद्रा का बर्थडे सेलिब्रेशन हुआ। इस खास मौके पर अमृतपाल ने अपने घर पर ग्रैंड सेलिब्रेशन रखा था, जिसमे कई फिल्मी सितारे शामिल हुए। सलमान खान से लेकर कटरीना कैफ समेत कई सेलेब्स पहुंचे थ। इन्ही में से एक थी रिया चक्रवर्ती । इस दौरान रिया बंटी सजदेह की बहन सीमा सजदेह और अपने भाई शोविक के साथ स्पॉट की गईं। रिया और सीमा को कार की पिछली सीटों पर देखा गया, शोविक आगे की सीट पर बैठे नजर आ रहे हैं। इस तस्वीर को देख यूजर्स का कहना है कि रिया ने बंटी के साथ अपने रिश्ते पर मुहर लगा दी है। सोशल मीडिया यूजर रिया चक्रवर्ती को सीमा सजदेह के साथ देखकर तरह-तरह के कमेंट कर रहे हैं। किसी का कहना है कि रिया ने बंटी के साथ अपनी रिलेशनशिप की खबरों के पक्का कर दिया है। एक यूजर ने लिखा, 'बंटी और इसका चक्कर', तो दूसरे ने लिखा, 'तो रिया बंटी को डेट कर रही हैं।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।